



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

जीव अजीव की
पहचान हुए बिना मन का
भ्रम नहीं मिटता। सम्यक्त्व
आए बिना कर्म का निरोध
नहीं होता।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 31 • 06 मई - 12 मई, 2024



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-05-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

**आचार्यश्री महाश्रमण
जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा
कल्याण महोत्सव**

**के पावन अवसर
पर सादर श्रद्धा
प्रणति**



रत्न प्रसूता मां नेमां की,
पुनवानी अनपार।
दूगड़ कुल सरदारशहर में,
जन्मा राजकुमार।।
शुभ महीना वैशाख जन्म,
संयम, तेरापथ ताज।
अनुकंपा का सुमन खिलाने,
प्रकट हुआ ऋतुराज।।

श्रद्धाप्रणतः अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

मनुष्य को एकांत सुख देने वाला है धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

बीड़।

27 अप्रैल, 2024

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमणजी ने बीड़ प्रवास के दूसरे दिन अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जिस व्यक्ति का मन सदा धर्म में रत रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं। मनुष्य मनुष्य को नमस्कार करे यह तो सामान्य बात है, मनुष्य देव को नमस्कार करे यह भी सामान्य बात हो सकती है, परन्तु स्वर्ग में रहने वाले देव किसी मनुष्य को नमस्कार करें यह विशेष बात हो जाती है।

धर्म की यह महिमा है कि धर्म होने से देव भी नमस्कार करते हैं। मनुष्य को एकान्त सुख, सर्व दुःख मुक्ति दिलाने वाला धर्म होता है। वह धर्म अहिंसा, संयम और तप है। इन तीन के सिवाय कोई और आध्यात्मिक धर्म नहीं होता है।

प्रश्न है कि अहिंसा धर्म क्या है? सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान



समझना और उनके प्रति अनुकम्पा-मैत्री का भाव रखना अहिंसा है। हमारी दुनिया में अनन्त-अनन्त संसारी जीव हैं जो जन्म-मरण करने वाले हैं। जीवों के प्रति अहिंसा की भावना होनी चाहिए, हिंसा से बचने का प्रयास होना चाहिए। दुःख हिंसा से प्रसूत होते हैं। हिंसा के पीछे

राग-द्वेष के भाव भी जुड़े रहते हैं। आदमी के मन में समता-अभय के भाव हों।

डरना भी दुर्बलता है, तो डराना भी दुर्बलता है। अभय से आदमी अहिंसा की अच्छी साधना कर सकता है। ऐसे जनों को नमस्कार है किया गया है जिन्होंने भय को जीत लिया है। हिंसा का एक

कारण भय हो सकता है, हिंसा लोभ के कारण भी हो सकती है। अहिंसा को परम धर्म कहा गया है तो अपरिग्रह को भी परम धर्म कहा गया है। परिग्रह हिंसा का कारण बन सकता है, आक्रोश के कारण से भी आदमी हिंसा कर सकता है। शास्त्र से भी आदमी हिंसा कर सकता है। शास्त्र की वाणी है- किसी को भी जान बूझकर

मारो मत, यह अहिंसा धर्म है। सब प्राणी जीना चाहते हैं कोई मरना नहीं चाहता।

यह धर्म सा नहीं होनी चाहिये। गृहस्थ जीवन में भी जितनी अहिंसा रह सके, रखने का प्रयास और शाश्वत है। हम अहिंसा धर्म की आराधना करें। साधु तो अहिंसा मूर्ति होते हैं। साधु तो यह सोचें कि मेरे प्राण भले चले जाए पर मेरे कारण से किसी जीव की हिंस करें। गृहस्थ भी अणुव्रतों को, बारह व्रतों को पालने का प्रयास करें।

गृहस्थ जीवन में भी अहिंसा, संयम की साधना का प्रयास करें। अणुव्रत में भी संयम की बात है, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जीवन में रहे। जीवन में सद्गुणों का महत्त्व है, जीवन में अच्छी विशेषताएं हो। तप भी धर्म है, तपस्या बाह्य और आभ्यंतर भी होती है। अहिंसा, संयम और तप हमारे जीवन में रहे। हम मोक्ष की साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

(शेष पेज 2 पर)

अनुकूलता व प्रतिकूलता में सम रहने वाले महावीर को नमस्कार: आचार्यश्री महाश्रमण

थेरला।

24 अप्रैल, 2024

कौन से महावीर को नमस्कार करें? किसी का नाम महावीर है या किसी स्थान का नाम महावीर से संबद्ध है या जो मरीची थे या वर्धमान जब बालरूप में थे, किसको नमस्कार करें? श्लोक में कहा गया है कि निर्विशेषमनस्काय जिनका मन समता में था, ऐसे समता पुरुष महावीर स्वामी को मेरा नमस्कार है। प्रश्न होता है कि उन्होंने किन बातों में समता रखी? श्लोक में उदाहरण दिया गया है कि चण्डकौशिक सर्प ने पाद स्पर्श किया, काटा तो भी द्वेष भाव में नहीं और एक ओर सुरेन्द्र ने नमन किया तो भी समत्व भाव में रहे। एक अनुकूलता की स्थिति और दूसरी प्रतिकूलता की स्थिति, इन दोनों में जो निर्विशेष रहे, ऐसे वीर स्वामी को मेरा नमस्कार है।

उपरोक्त विचार अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए।

भगवान महावीर समता योगी, समता-साधक, समता मूर्ति महापुरुष थे।



वर्धमान बच्चे के रूप में रहे, पाठशाला भी गए, युवावस्था में गार्हस्थ्य में प्रवेश भी हुआ। जब तक माता-पिता उपस्थित थे तब तक उन्होंने दीक्षा नहीं ली उनके देहावसान के बाद भाई नन्दीवर्धन से आज्ञा प्राप्तकर दो वर्ष बाद दीक्षा ली।

नन्दीवर्धन के दो साल बाद दीक्षा के लिए स्वीकृति संभवतः इस कारण से दी होगी

कि माता-पिता के देहावसान के साथ भाई के वियोग की बात उन्हें स्वीकार नहीं थी या फिर राजकीय शोक के समय दीक्षा महोत्सव करने में प्रतिकूलता थी। दो वर्षों में भी वर्धमान का जीवन त्याग और संयम के साथ ही बीता।

मृगसर कृष्णा दशमी के दिन महावीर ने दीक्षा ली। दीक्षा लेते समय उन्होंने

प्रतिज्ञा की कि अब से सारे सावद्य कार्य मेरे लिए अकरणीय हैं, जो भी उपसर्ग आएंगे उन्हें समता भाव से सहन करूंगा। लगभग 12.5 वर्ष तक उनकी साधना चली। इस साधना काल में ही चण्डकौशिक सर्प से भी मिलना हुआ मानो नागराज को भी महावीर का पाँव मिला जिससे उसका कल्याण हो

गया। उसने भगवान महावीर से प्रतिबोध प्राप्त किया, जातिस्मृति ज्ञान हुआ और अनशन कर वैमानिक देवलोक में पैदा हुआ। जो आत्मा साधु बनी, तीर्थकर बनी, उस भाव अवस्था वाले, साधुत्व वाले महावीर को नमस्कार करता हूँ। चार निक्षप हो जाते हैं - नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। महापुरुष जितने भी हुए हैं वे कल्याणी वाणी की वागवर्णना करने वाले होते हैं। दुनिया में कितने धर्म, पंथ, महापुरुष और संत हुए हैं। अच्छी वाणी किसी भी ग्रन्थ में है, किसी भी पंथ में है, किसी भी सन्त की है, अच्छी वाणी तो अच्छी ही है, सच्ची वाणी सच्ची ही है। अच्छी और सच्ची वाणी का सम्मान है। ग्रन्थों को सुनें या पढ़ें तो हमें ज्ञानात्मक लाभ मिल सकता है। हम वीतरागता, समता की साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच बालासाहब राव, प्रधानाचार्य प्रताप कालेसर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच बालासाहब राव, प्रधानाचार्य प्रताप कालेसर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

मनुष्य को एकांत...

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने सबको जागने की प्रेरणा दी। जो जागता है, वह धन्य होता है। गुरु शिष्यों को जागृति का सन्देश देते हैं। जागने वाले का श्रुत ज्ञान स्थिर और परिचित रहता है। जो मुनि स्वाध्याय नहीं करता, जो सोता है उसका श्रुत ज्ञान स्थिर नहीं रह पाता। भगवान ने कहा है कि पाप कार्य में प्रवृत्त लोगों का सोना अच्छा है, धर्म कार्य में प्रवृत्त लोगों का जागना अच्छा है। जो ज्ञानी होते हैं वे सोते हुए भी जागृत रहते हैं। आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी यात्राओं के माध्यम से विलास से विरक्ति का, जागृति का संदेश दे रहे हैं। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि हमें मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ है, उसके अच्छे उपयोग का सद्ज्ञान कराने वाले गुरु होते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे गुरु प्राप्त हैं जो हमारे जीवन को सार्थक और सफल बनाने वाले होते हैं। सम्यक् मार्ग को प्राप्त करने के लिए सद्गुरु का मिलना आवश्यक है। सच्चे गुरु अज्ञान का नाश कराने वाले, आगम अर्थ का ज्ञान कराने वाले, पुण्य-पाप का भेद कराने वाले, करणीय और अकरणीय का भेद करने वाले होते हैं।

पूज्यवर के स्वागत में मुनि लक्ष्य कुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा-बीड के अध्यक्ष नेमकरण समदड़िया, जैन समर्थ गच्छ के अध्यक्ष विजयराज जैन, दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष नरेन्द्र महाजन व सुभाष जैन ने पूज्य प्रवर की अभिवंदना में अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद व जैन समाज की महिलाओं ने पृथक पृथक गीत का संगान किया। बीड की बहन-बेटियों एवं अम्बाजोगाई तेरापंथ महिला मण्डल ने भी गीत का संगान किया। महाराष्ट्र सरकार के मंत्री जयदत्त अन्ना क्षीरसागर ने भी आचार्यश्री के दर्शन अपनी विचार अभिव्यक्ति किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अलोभ से लोभ को प्रहत करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेड़गांव।

28 अप्रैल, 2024

साम्ययोग के महासाधक आचार्य श्री महाश्रमण जी बीड का द्विदिवसीय प्रवास संपन्न कर पेड़गांव पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि कषाय के द्वारा कर्म मल का आगमन होता है। कषाय को दो भागों में विभाजित करें तो राग और द्वेष हो जाते हैं, चार भागों में बांटना चाहे तो क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय हो जाते हैं।

सबसे बाद में क्षीण होने वाला कषाय लोभ होता है। क्रोध, मान और माया ये तीनों चले जाते हैं, तो भी लोभ अन्त में थोड़ा विद्यमान रहता है। लोभ एक वृत्ति है, इस वृत्ति के कारण आदमी आपराधिक प्रवृत्ति में संलग्न हो सकता है। लोभ को पाप का बाप कहा गया है। बहुत से पापों की जड़ में लोभ बैठा होता है। अति लोभ कष्टकारी हो सकता है, अति सर्वत्र वर्जित है। ज्यों-ज्यों लाभ होता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता जाता है। लाभ रूपी जल लोभ रूपी जड़ को सिंचन देने वाला हो सकता है। लोभ की प्रवृत्ति से अध्यात्म की चेतना दौर्बल्य को प्राप्त हो सकती है,



जब अध्यात्म की चेतना प्रबल होती है तब लोभ को क्षीण होना होता है। हमारी लोभ की चेतना क्षीण हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए।

अलोभ से लोभ को हम कम करने का प्रयास करें। संतोष की चेतना को प्रबल करने का प्रयास करें। कहा गया है- 'जब आये सन्तोष धन, सब धन धूलि समान।' आदमी को जो नहीं मिलता है, उसके प्रति कसक रह जाती है, यह लोभ की प्रवृत्ति है। जो संत लोग जगत की मोह-माया से उपर उठे हुए हैं, कंचन-कामिनी के त्यागी हैं, वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ने वाले

हैं वे तो आकिन्चन्य को प्राप्त हो गये हैं। लोभ के कारण आदमी बेईमानी की ओर प्रवृत्त हो सकता है। लोभ को हम प्रहत करने का प्रयास करें, मन में संतोष की अनुप्रेक्षा करें, इच्छाओं का परिसीमन करें, भोग-उपभोग में सीमा करें। गृहस्थ भी जीवन में त्याग-संयम की साधना करें। त्यागी साधु बहुत सुखी हो सकता है, मोह-माया में लिप्त आदमी दुःखी रह सकता है। गृहस्थ स्वर्ण में मूर्च्छित न हो जाए, परिग्रह में रहते हुए भी पानी में कमल पत्र की तरह निर्लिप्त-अनासक्त रहने का, लोभ को जीतने का प्रयास करें।

युवकों में हो संकल्प शक्ति का विकास

उधना।

परम पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास प्रवास के संदर्भ में तेरापंथ युवक परिषद् उधना द्वारा 'कैसे हो युवा शक्ति का जागरण' विषयक कार्यशाला का आयोजन मुनि उदितकुमार जी के सान्निध्य में हुआ। मुनिश्री ने कहा- पूज्यवर का सूरत महानगर में पदार्पण नगरवासियों के लिए विशेषतः श्रद्धालु श्रावक समाज के लिए एक अद्वितीय अवसर है। युवाओं के लिए तो यह एक स्वर्णिम काल है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि किसी भी कार्य में अगर युवा शक्ति सक्रियता के साथ जुड़ जाए तो उस कार्य में सफलता सहज ही प्राप्त हो जाता है। युवक समाज की रीढ़ होते हैं। आज आर्थिक दौड़ में युवा तेजी से दौड़ रहे हैं पर धार्मिक क्षेत्र में भी शिथिलता नहीं आनी चाहिए। पूज्यवर का चातुर्मास हेतु सूरत

पदार्पण हो रहा है युवा अपनी क्षमता का संगोपन न कर अपनी शक्ति को पूज्यवर की सेवा और संघ प्रभावना में अर्पित करें। इस कार्यशाला का मंगलाचरण भजन मंडली ने विजय गीत के संगान के साथ किया। मुनि ज्योतिर्मय कुमार जी ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। स्थानीय वरिष्ठ श्रावक लक्ष्मीलाल बाफणा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् गुजरात संभाग प्रमुख कुलदीप कोठारी, तेयुप उधना अध्यक्ष हेमंत डांगी, तेरापंथ महिला मंडल उधना की अध्यक्ष सोनू बाफणा, संपत आंचलिया, तेरापंथ

सभा के मंत्री सुरेश चपलोट, पूर्व तेयुप अध्यक्ष सुनील चंडालिया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विकास कोठारी ने किया। चतुर्दशी के उपलक्ष्य में मुनिश्री ने हाजरी का वाचन किया। आचार्यश्री महाश्रमण के सूरत चातुर्मास के संदर्भ में करणीय कार्यों के संदर्भ में मुनिश्री ने बलवती प्रेरणा प्रदान की। बड़ी संख्या में युवाओं ने विभिन्न उपक्रमों में अपनी सेवा देने हेतु स्वयं को प्रस्तुत किया। कार्यशाला के संभागी किशोर-युवाओं के साथ खुला मंच चला जिसमें उनके द्वारा समागत जिज्ञासाओं का मुनिश्री ने समाधान दिया।



मुनिश्री ने कहा कि किसी भी कार्य में अगर युवा शक्ति सक्रियता के साथ जुड़ जाए तो उस कार्य में सफलता सहज ही प्राप्त हो जाती है।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला संपन्न

पूर्वांचल कोलकाता।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में प्रेक्षा प्रशिक्षक राजेन्द्र मोदी के निर्देशन में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन जैसोर रोड स्थित अवनी कॉम्प्लेक्स प्रांगण, पूर्वांचल में हुआ, जिसमें सैकड़ों लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा जिस प्रकार शरीर में मस्तक का, वृक्ष में जड़ का मूल्य होता है उसी

प्रकार आत्म साधना में ध्यान का मूल्य है। ध्यान वर्तमान में जीने की कला सिखाता है। ध्यान सुप्त शक्तियों को जागृत करने का अमोघ साधन है। ध्यान गंगाजल के समान है। ध्यान भारतीय संस्कृति की आत्मा है। ध्यान से आचार विचार, संस्कार, व्यवहार में बदलाव आता है।

मुनिश्री ने आगे कहा समस्या का मूल है अपने आपसे अपरिचित रहना। मनुष्य दूसरों को जानता है, पहचानता है, दूसरों से परिचित होता है किन्तु अपने आपको नहीं जानता है। जिसके कारण नाना प्रकार की बीमारियों का

जन्म हो रहा है। उन समस्याओं व बीमारियों से छुटकारा पाने का अमोघ उपाय है- प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान स्व को जानने की प्रक्रिया है।

गुरुदेव तुलसी की सन्निधि में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेक्षाध्यान का शुभारंभ किया। मुनिश्री ने स्वास्थ्य की अनुप्रेक्षा कराई। प्रेक्षा प्रशिक्षक राजेन्द्र मोदी ने प्रशिक्षण देते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। आभार तेरापंथ सभा के मंत्री बालचंद्र दुगड़ व अवनी कॉम्प्लेक्स के अध्यक्ष अशोक कुमार अग्रवाल व राजकमल बांगड़ व अवनी के कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा।

भगवान ऋषभ का है मानव जाति पर अनंत उपकार

पड़िहारा।

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल भवन में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभ का दीक्षा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए शासनश्री मुनि विजयकुमारजी ने कहा- आज का दिन मानव जाति के अभ्युदय का दिन कहा जा सकता है।

भगवान् ऋषभ ने चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन दीक्षा लेकर धर्म युग का विधिवत् प्रवर्तन किया था। उन्होंने अपने जीवन के पूर्व भाग में मानव जाति को कर्म युग का प्रशिक्षण दिया। उस समय के आदमी अत्यधिक सरल स्वभावी थे। निंदा, प्रवंचना, प्रदर्शन, संग्रह जैसी मलिन वृत्तियों ने उस युग में जन्म ही नहीं लिया था। प्रकृति से मनुष्यों की जीवनगत आवश्यकताएं पूरी हो जाती थी। धीरे-धीरे प्रकृति जन्य व्यवस्थाएं टूटने लगी। छीनाझपटी और अपराधी मनोवृत्तियां जनमानस में पनपने लगी।

किसी ने सही कहा है- 'अव्यवस्था व्यवस्था की जननी है।' बढ़ती हुई अव्यवस्था पर नियंत्रण करने पिता नाभि कुलकर ने ऋषभ को व्यवस्थाओं का संचालन करने के लिए कहा। ऋषभ का राज्याभिषेक हुआ, वे उस युग के प्रथम राजा कहलाए। ऋषभ ने अपने पुत्र-पुत्रियों को अनेक प्रकार की जीवन से जुड़ी हुई कलाएं व विद्याएं

सिखाई। जन सामान्य को प्रशिक्षण देकर तैयार किया। दंड संहिता का निर्माण किया गया। व्यवस्था भंग करने वालों को यथोचित दंड दिया जाने लगा। सारी व्यवस्थाएं संपादित करके राजा ऋषभ ने त्याग की संस्कृति को विकसित करना जरूरी समझा। उन्होंने अपने पुत्रों को राज्य का वितरण करके चार हजार क्षत्रियों के साथ साधना का जीवन स्वीकार कर लिया।

यद्यपि मुनि धर्म का ज्ञान न होने से व मुनि ऋषभ के लक्ष्य प्राप्ति पर्यंत मौन होने से बहुत सारे मुनि अपने मुनित्व को छोड़कर अन्य रूप में साधना करने लगे। मुनि ऋषभ को पुरिमताल नगर में परम ज्ञान की प्राप्ति हुई। कैवल्य की प्राप्ति के बाद उन्होंने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थ की स्थापना की। लंबे समय तक उन्होंने धरती पर विचरण किया।

अंत में अष्टापद पर्वत पर अनशन करके परमधाम मोक्ष को प्राप्त किया। कर्म युग और धर्म युग दोनों का प्रवर्तन करके भगवान् ऋषभ ने मानव जाति पर अनंत उपकार किया। भगवान् ऋषभ के दीक्षा दिवस के साथ ही शासनश्री मुनिवर का मंगल भावना कार्यक्रम भी जुड़ा हुआ था। परम पूज्य गुरुवर की असीम कृपा से यहां मुनिश्री का एक मास का सफल प्रवास हुआ। यहां से रतनगढ़ की ओर मुनिश्री का प्रस्थान होगा।

कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का हुआ आयोजन

अहमदाबाद। तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कैंसर जागरूकता अभियान के तहत गुजरात कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट के सहयोग से वैन में मैमोग्राफी टेस्ट का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा महामंत्री नीतू ओस्तवाल आदि की उपस्थिति में नमस्कार महामंत्र के उच्चारण द्वारा एवं संरक्षिका प्रकाश देवी तातेड के द्वारा

स्वास्तिक करके किया गया। स्थानीय अध्यक्ष हेमलता परमार और उनकी पूरी टीम की उपस्थिति रही। गुजरात कैंसर इंस्टीट्यूट से डिप्टी डायरेक्टर डॉक्टर प्रीति सिंघवी डॉक्टर रोहिणी टीम के साथ उपस्थित होकर मैमोग्राफी टेस्ट किया। यह कार्य अवेयरनेस का पूरे वर्ष भर महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा निःशुल्क किया जाएगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहमंत्री सुमन कोठारी एवं पूर्व मंत्री अनिता कोठारी का पूर्ण सहयोग प्रदान हुआ।

पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित पौध को सींचे का कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा शांतिनिकेतन में साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजल प्रभाजी के सान्निध्य में किया गया।

साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि बच्चों से दिल की बात करें, प्यार करें। उन पर अनुशासन थोपे नहीं, स्वयं अनुशासन

में रहें, उनसे संवाद करें और इस प्रश्न का उत्तर खोजें की बच्चा आपका है या मोबाइल का।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के साथ किया गया। मंडल उपाध्यक्ष प्रेम बोथरा ने सभी का स्वागत किया।

अंकिता सेठिया व तमन्ना भूरा ने नाटिका के माध्यम से बताया कि बच्चे तनाव में आकर कैसे गलत कदम उठा लेते हैं।

साध्वी वैभवयशा जी ने कहा कि बच्चों की पहली प्रशिक्षिका उनकी मां

होती है, उन्हें संस्कार गर्भ से ही दिए जाने चाहिए। मुख्य वक्ता राजकीय विद्यालय के प्रधानाचार्य रतन छल्लानी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि माता-पिता को बच्चों से संवाद करना चाहिए।

दादा-दादी, नाना-नानी उनके साथ समय बिताएं व कहानियों के माध्यम से उनमें संस्कारों का बीजारोपण करें। अपने बच्चों को बेस्ट बनाएं बॉस नहीं। मंडल अध्यक्ष संजू लालानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन अंकिता सेठिया ने किया।



युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर अभिवंदना के स्वर

अद्भुत श्रोता हैं आचार्य श्री महाश्रमण

● समणी सन्मति प्रज्ञा ●

किसी भी व्यक्ति को देखने का अपना-अपना नजरिया होता है। श्री राम को कोई नीतिधर राजा के रूप में देखता है तो कोई पतित पावन भगवान के रूप में। कोई उनका मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप का आकलन करता है तो कोई मुक्त आत्मा के रूप का। इसी प्रकार श्री कृष्ण की कहानी है। विश्व की लगभग 8.02 अरब मनुष्यों की अभिवृत्तियों को प्रदर्शित करने वाला एकमात्र ऐसा पात्र है जिसमें हर इंसान अपने पसंद का कोई न कोई रूप ढूंढ सकता है। बड़ा आकर्षक व्यक्तित्व रहा है श्री कृष्ण का। वर्तमान युग में भी एक ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व हैं जिनके जीवन के हर कोण में कुछ विलक्षणताएं मुखरित हैं। वाणी भले ही उनकी ज्यादातर मौन रहे। वैखरी वाणी को वे बड़े मापतोल के साथ काम में लेते हैं, लेकिन परा, पश्यन्ती और मध्यमा उनके कार्य संपादन में सदा सक्रिय रहती हैं। इस विलक्षण विशेषता को धारण करने वाले महान व्यक्तित्व का नाम है- आचार्यश्री महाश्रमण।

आचार्य श्री महाश्रमण श्रीधर हैं। सम्यक्त्वश्री, संयमश्री, तपश्री, चारित्रश्री, आगमश्री, अप्रमत्तश्री, लिखितश्री, संकल्पश्री, रूपश्री, स्मितश्री, सेवाश्री आदि अनेक श्रियां उनके जीवन में प्रतिपल आकर्षण का संचार कर रही हैं। यही वजह है कि इनके सान्निध्य में देश-विदेश से अनेक लोग पहुंचते हैं, इन्हें देखने के लिए, दर्शन की एक झलक पाने के लिए। आने वाले लोग उनके अलग-अलग स्वरूपों के दर्शन कर मन को आह्लादित करते हैं। मैंने भी उनके कई रूप देखे हैं उनमें से एक है- वे अद्भुत श्रोता हैं।

अद्भुत श्रोता

आचार्यश्री महाश्रमण किस तरह के श्रोता हैं? उनके लिए उपमा खोजनी मुश्किल है। फिर भी, यदि कोई उनके लिए उपमा खोजना चाहे तो उसे महापुराण ग्रंथ में डुबकी लगानी पड़ेगी। महापुराण में चौदह प्रकार के श्रोताओं का उल्लेख प्राप्त है-

मृच्चलिन्यजमार्जारशुककंकशिलाहिभिः।

गोहंसमहिषच्छिद्रघटदंशजलौककैः॥

चौदह प्रकार के श्रोता- मिट्टी, चलनी, बकरा, बिलाव, तोता, बगुला, पाषाण, सर्प, गाय, हंस, भैंसा, फूटा घड़ा, डांस और जोक के समान कहे गये हैं। ये भेद श्रोता के गुण-दोषों से तुलना करके बताये गये हैं। उत्तम कोटि के श्रोता गाय और हंस के समान होते हैं। जैसे गाय खाती तो है घास, लेकिन देती है दूध, वैसे ही जो थोड़ा सा उपदेश सुनकर चिंतन, मनन, और मंथन से ज्ञान के नये रहस्यों को पा लेते हैं वे गाय के समान श्रोता हैं।

जो केवल सार वस्तु को ग्रहण करते हैं, वे हंस के समान श्रोता हैं। आचार्य श्री महाश्रमण उत्तम कोटि के श्रोता हैं। उनमें श्रोता के शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, स्मृति, ऊह, अपोह और निर्णीत- ये आठों गुण सन्निहित हैं।

श्रोता वक्ता तादात्म्य

आचार्यश्री महाश्रमण शशककर्णी हैं। उनके कानों की संरचना देखेंगे तो लगेगा वे कुछ सुनने को उद्यत हैं, और ऐसा है भी। आप उन्हें कहते जायें वे सुनते जाएंगे। दक्षिण भारत की यात्राओं के दौरान देखा, जब वे श्रद्धा के घरों के आगे से गुजरते, परिवार के लोगों की भीड़ जमा हो जाती। आचार्यश्री एक छोटी टेबल पर बिराज जाते, कोई स्वागत गीत सुनाते, कोई भाषण बोलते, कहीं कहीं बच्चों की प्रस्तुतियां भी हो जातीं। आचार्यश्री बड़े धैर्य के साथ सबको सुनते। स्थान पर आते-आते आधा दिन व्यतीत हो जाता। प्रवचन के समय भी ऐसा ही होता है। आचार्यश्री का मुख्य उद्बोधन हो जाने के पश्चात् जो जाना चाहे, चले जाएं, परंतु आचार्यश्री वहीं बिराजे रहते हैं।

सजग श्रवणेन्द्रिय

आचार्यश्री महाश्रमण की श्रोत्रेन्द्रिय राष्ट्रपति के बॉडीगार्ड की तरह सजग रहती है। दर्शनार्थ आने वाले महानुभावों को भी अपने मन की अभिव्यक्ति देने का अवसर प्रदान किया जाता है। एक बार हम पूर्वी भारत की यात्रा की यात्रा कर रहे थे। एक भाई के मन में काफ़ी कुछ बातें उफ़न रही थीं। मैंने कहा- देखिए, आपकी बातों का समाधान हम तो नहीं कर सकेंगे, आपको जब भी अवसर मिले आप गुरुदेव से निवेदन करें। समाधान वहीं से मिल सकेगा। उसने कहा- मैं पर्युषण के पश्चात् जाने ही वाला हूँ। वे गुरु सन्निधि से लौटे तो संतुष्ट नजर आ रहे थे। उन्होंने बताया कि उनकी गुरुदेव से करीब आधा घंटे बात हुई। सारी बातें निवेदन कर दी। गुरुदेव ने सारी बातें बड़े ध्यान से सुनीं। पूछा भी था कि कुछ और कहना है तो बोलो। मैंने पूछ लिया - गुरुदेव ने क्या फ़रमाया? उन्होंने बताया- गुरुदेव ने कहा आपके विचार बहुत अच्छे हैं। मैंने सोचा- आधे घंटे बात का उत्तर सिर्फ़ पांच शब्दों में! सत्य है- विचारों की गहराई को शब्दों की लंबाई से नहीं मापा जा सकता। न बोलकर जो कहा जाता है वह सटीक होता है। बोलकर कहने से वह हमेशा अधूरा ही रह जाता है। महावीर ने अनेकान्त इसीलिये दिया कि लोग ये जान सके- कथन के आर-पार जो अनकहा है उसको समझे बिना सत्य हाथ नहीं लग सकता।

मोटिवेशनल लिस्नर

आपने बहुत से लोकप्रिय प्रेरक वक्ताओं के नाम सुने होंगे, पर कोई ऐसे जनप्रिय प्रेरक श्रोता का नाम

नहीं सुना होगा जो स्वयं चुप रहकर आपको बात करने के लिए प्रेरित करते हों। जो स्वयं न बोलकर भी आपको बहुत कुछ अहसास करा देने का सामर्थ्य रखते हों। तो आज सुन लीजिए वह नाम है- आचार्य श्री महाश्रमण। एक घटना पढ़ी थी- अमेरिका में गृहयुद्ध चल रहा था। लिंकन उसका समाधान खोजने की कोशिश में थे। किसके साथ मशविरा करें? उन्हें अपने एक घनिष्ठ मित्र की याद आयी। उन्होंने मित्र को संदेश भेजा कि उसे एक समस्या पर विचार- मंथन करना है, तुम्हारी आवश्यकता है। मित्र आ पहुँचा। मित्र के समक्ष वे 'दासों की मुक्ति' की घोषणा को उचित सिद्ध करने के लिये घंटों तक अपने विचार सुनाते रहे। काफी देर बोलने के बाद उन्होंने हाथ मिलाया और धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने मेरी बड़ी सहायता की। मित्र सुनकर हैरान रह गया- कैसी सहायता? मैंने तो कुछ कहा ही नहीं। कहने का अवसर भी तो नहीं दिया। उसे कुछ समझ में नहीं आया। समझ में आया भी कैसे?

लिंकन को वास्तव में किसी सलाहकार या सलाह की ज़रूरत नहीं थी, उन्हें तो आवश्यकता थी एक सच्चे श्रोता की, जो केवल उनके मन में उठ रहे विचारों को सुन ले। बस। समाधान तो उनके पास था ही। उन्होंने अपने तर्कों को अकाट्य बनाने के लिए एक छोटा सा रिहर्सल करना चाहा था। लिंकन का उद्देश्य पूरा हो गया।

अटूट धैर्य

लिंकन के मित्र जैसी मित्रता निभाने के लिए अटूट धैर्य की आवश्यकता होती है। लिंकन के मित्र में कितना धैर्य रहा होगा, ये तो वो ही जाने पर आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने भीतर एक अद्भुत श्रोता को जन्म दिया है जिसका कोई जोड़ नहीं। अपनी सुनाने वाले तो बहुत मिलेंगे, प्रेरणा और उपदेश देने वाले भी बहुत मिलेंगे लेकिन दूसरों की सुनने वाले नहीं-न तो तारीफ़ न तरक़्की और न ही दुःख-दर्द।

इस युग में परिवारों की हालत और बड़े-बूढ़ों की स्थिति ऐसी बन रही है कि परिवार के साथ रहते हुए भी वे अकेले हैं। समाज में बसते हुए भी वे उजड़े हुए से हैं। इससे मानसिक संतुलन बिगड़ रहा है। अगर उन्हें कोई अच्छा श्रोता मिल जाए तो उनकी आधी बीमारी ऐसे ही ठीक हो जाये।

बुझते हुए दीपकों में फिर से टिमटिमाने की ताकत आ जाये, यदि उन्हें मोटिवेशनल स्पीकर के स्थान पर मोटिवेशनल लिस्नर मिल जाये। ज्यादा मुश्किल नहीं है मोटिवेशनल स्पीकर बनना, मोटिवेशनल लिस्नर बनने के लिए तो स्वयं को तपाना पड़ता है। आचार्य श्री महाश्रमण हम सबके लिए आदर्श हैं क्योंकि अद्भुत श्रोता हैं।

कैसे लिखूं तेरे गुण प्रभुवर ?

● मुनि दीपकुमार ●

संस्कृत साहित्य की एक प्रसिद्ध सूक्ति के अनुसार रमणीय वही है जो नया और प्राणवान है। आचार्य श्री महाश्रमण जी अपने जीवन के बासठ वसन्त पार कर रहे हैं, किंतु उनके मानस में आज भी ऋतुराज की सुंदरता और सरसता का दर्शन होता है। उनमें हर समय नई कल्पना और नए उत्साह के सुमन खिलते रहते हैं। अतीत के प्रति गहरी आस्था होते हुए भी उनकी आंखों में भविष्य का विश्वास और उल्लास मुखर होता रहता है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी सरोवर नहीं, भागीरथी की बहती धारा हैं। उनके हर श्वास में प्रगति का स्वर प्रस्फुटित होता रहता है। जड़ता और स्थिति पालकता उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है। निश्चित लक्ष्य पर पहुंचने के लिए उन्होंने भारी पुरुषार्थ किया है, उनके चरण हर समय आगे बढ़ते रहे हैं और उनकी साहसिक यात्राएं सदा सफल रही हैं।

आचार्यश्री महाश्रमण जी परिस्थितिवाद के उपासक नहीं हैं। उन्हें व्यक्ति की असीम शक्ति पर दृढ़ विश्वास है। वे निमित्त की अपेक्षा उपादान को अधिक महत्व देते हैं। उनके चिंतन के अनुसार व्यक्ति ही परिस्थितियों का निर्माता है। यदि शक्ति जागृत हो तथा लक्ष्य पवित्र हो तो कठिन से कठिन परिस्थिति अनुकूल बन जाती है व विकास में सहयोगी बन जाती है। यदि व्यक्ति स्वयं ही दुर्बल हो तथा उद्देश्य विकृत हो तो सुखद निमित्त भी दुःखद बन सकता है। हवा के झोंके से दीपक की टिमटिमाती लौ बुझ जाती है किंतु दावानल ओर अधिक प्रज्वलित हो जाता है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी आत्मविश्वास को महान संबल मानते हैं। फलतः कठिन से कठिन परिस्थितियां भी उनके लिए वरदान सिद्ध हो गईं। आचार्यश्री महाश्रमण जी का लक्ष्य बूंद नहीं, महासागर है। रश्मि नहीं सूरज है। इस दीक्षा कल्याण महोत्सव, 63वें जन्मदिवस और 15वें पदाभिषेक दिवस के पुनीत अवसरों पर हम यह आशा करते हैं कि आचार्यवर के जीवन की बहती हुई निर्मल धारा विश्व के मंच से संकीर्णता का कलुष धोकर कोटि-कोटि लोगों के मानस को मैत्री और समता की भावना से आप्लावित करेगी। आचार्यवर की महिमा अपरंपार है उसे अल्प शब्दों में लिखना कठिन है।

सब धरती कागज करो, कलम करो वनराई। सब समुद्र स्याही करो, गुरु गुण लिखना न जाई।



युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर अभिवंदना के स्वर

प्रभुवर को हम आज बधाएं

● साध्वी सुव्रतयशा ●

हे महासूर्य हे महाज्योति तुम महातपस्वी कहलाए।
सरदारशहर की पुण्य धरा पर, युगप्रधान अभिषेक मनाए।।

पांव-पांव चलकर के तुमने, दिया विश्व को नव संदेश,
श्रम की ज्योति जले निरंतर, गण में छाया नव उन्मेष।
जन-जन के तुम भाग्य विधाता, मंगल स्वस्तिक आज रचाए।।

महाप्रज्ञ के हो तुम पट्टधर, चमक रहे हो ज्यों ध्रुव तारा,
कुशल शासना अनुपम तेरी, मिला संघ को दिव्य सितारा।
भावों की सौगात लेकर, प्रभुवर को हम आज बधाएं।।

देश-विदेशों की यात्रा कर, जन-जन को आलोक दिखाया,
प्रवचन शैली है अलबेली, नशा मुक्ति का पाठ पढ़ाया।
दीक्षा का यह उत्सव आया, स्वर्णजयन्ती आज मनाएं।।

मां नेमा के घर आंगन में, एक अनोखा फूल खिला,
मंत्री मुनि की मिली प्रेरणा, अन्तस्थल का दीप जला।
युगों-युगों तक करो शासना, अन्तर मन की कामनाएं।।

हे युगप्रधान! करुणा निधान!

● साध्वी दीप्तियशा ●

तुलसी महाप्रज्ञ की दिव्य दृष्टि ने, दिव्य विभूति तुम्हें बनाया।
अद्भुत क्षमता समता से, गुरुद्वय दिल में विश्वास जमाया।
पौरुष की ले मशाल कर में, भैक्षव शासन को शिखरों चढ़ाया।

श्रमणों में भी महाश्रमण हो, अनुशासन की हो मिसाल।
हे ज्योतिचरण! हे महाश्रमण! तेरी महिमा है बेमिसाल।।

समय नियोजन, कुशल प्रबंधन, अप्रमत्तता है पहचान।
जन-जन का संताप हरे, सौम्य वदन मोहक मुस्कान।
अमृतमय तव मीठी वाणी, भरती निष्प्राणों में जान।
नजरो से नजरे मिलते ही, शांत होते मन के सवाल।
तारण-तरण, पावन शरण, तेरी महिमा है बेमिसाल।।

कालजयी व्यक्तित्व तुम्हारा, जग सारा तुमसे आकर्षित।
अनुपमेय नेतृत्व तुम्हारा, वत्सलता से हर मन हर्षित।
सृजनशील कर्तृत्व तुम्हारा, शुभ भावों से करते अर्चित।
मानव तन में देव स्वरूप हो, हृदय तेरा बेहद विशाल।
हे संघ पुरुष! हे युगपुरुष! तेरी महिमा है बेमिसाल।।

अर्ध सदी की संयम यात्रा, स्वर्णिम इतिहास रचाओ तुम।
गण विकास का चिन्तन कर, गण बगिया सरसाओ तुम।
दीप्तिमान हो जीवन मेरा, कृपा दृष्टि बरसाओ तुम।
दुर्लभ सन्निधि तेरी पाकर, हो जाता हर मनुज निहाल।
संयम प्रदाता! हे भाग्य-विधाता तेरी महिमा है बेमिसाल।।

स्वर्ग से सुंदर

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

सीमंथर प्रभु समवसरण सम महाश्रमण दरबार।
पापभीरू है तव जीवन, क्षीर-नीर सा यह उपवन।

आगम के अध्येता प्रवचन प्रभावक,
ज्ञान-दर्शन गुण संपन्न धृतिधर साधक,
आचार-कुशल श्रुत-सागर की, कांति मोहनगार।।

चुंबक ज्यों आकर्षण मन को लुभाएं,
आर्जव-मार्दव से दुनिया में छाएं,
स्फटिक जैसी पारदर्शिता, यायावर मनहार।।

धृतास्त्रव-लब्धि सम वचन में मिटास है,
एक हजार अष्ट गुणों से करते उजास हैं,
अक्षीणमहानस-लब्धि धारक दुगड़ कुल उजियार।।

त्रिभुवन के तारणहार ऋद्धि सुहानी,
क्षमा वीरस्य भूषणम् से रचदी कहानी,
चरण शरण से भव्य जीव पाते हैं बेड़ा पार।
दीक्षा कल्याणक उत्सव पर वंदन बार हजार।।

तेरा हिमालय आकाश चूमें

● साध्वी राजुलप्रभा ●

संघ हिमालय तेरी शरण में, बन जाए हम सारे सिद्धा,
पट्टोत्सव दिन है मनभावन, अभिनंदन नेमानन्दा।
महाप्रज्ञ पट्टधर शासन शेखर, मनहर है मृदु अनुशासना,
जय जय ज्योतिचरण, जय महाश्रमण, नारा है भाग्य सितारा।
वन्दे गुरुवरम् वन्दे कीर्तिधरम्, नाम है प्रबल सहारा।।

रचे इतिहास कितने शुभंकर, गण ध्वज फहरे जहां तक अम्बर,
आई विपदाएं चाहे भयंकर, चरण बढ़ते रहे नित निरन्तर।
बन राम जो चले तुम, चौदह बरस यों विचरे,
रावण हुए पराजित, घर-घर में जो थे पसरे।

नभ भी झुके दृढ़ हौंसलों के आगे, बांधा जगत ले हाथ प्रेम धागे।
रहे निरामय, पावन देहालय, यशगाथा सदियों तक गूंजे।।
तेरापंथ के महा अधिनायक, तेरे कदमों तले मेरी जन्त,
तुम्हें सुमरे जो विपदा घड़ी में, पूरी हो जाए मन की मन्तत।

जहां-जहां चरण टिकाए, रोशन वहां हो गई दुनिया,
तेरी दृष्टि की किरण से, खिलती है दिल की कलियां।
भगवान तू ही मेरा सच्चा आसरा है मेरा, मन कलश गुरु भक्ति से।
तू ही है अल्लाह, ईसा, परमेश्वर क्यों किसी और की जरूरत है।।

हम कैसे कथा सुनायें

● साध्वी पीयूषप्रभा ●

दीक्षोत्सव की अर्द्धशती पर प्रभु को आज बधायें।
श्री चरणों में मंगलमय श्रद्धा उपहार सजायें।।
श्रम की अकथ कहानी तेरी सुन रोमांचित होते,
कल्याणी वाणी से जन-मन पुलकित-हर्षित होते,
तेरे पर उपकारों की हम कैसे कथा सुनायें।।

अप्रमत्त जीवन शैली के हर पल का अभिनंदन करते,
महातपस्वी के तप का हम शत सहस्र वंदन करते,
समय प्रबंधन श्रेष्ठ प्रशासन सबके मन को भाये।।
आगम-खोजी आगम वाणी के अध्येता संधाता हो,
भैक्षव शासन नंदनवन के तुम ही भाग्य विधाता हो,
मस्त फकीरी, शुद्ध साधुता की क्या बात बतायें।।

दशों दिशाओं में प्रसरी महिमा

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

आर्हत वांगमय से प्रवचन की करते हैं शुरूआत,
दशों दिशाओं में प्रसरी महिमा है विख्यात।
योग विभूति के सिद्ध वचन मंगल है प्रख्यात।।

अहो वण्णो अहो रूवं

अद्भुत रूप-स्वरूप सौन्दर्य मनहारा।
आत्मिक चिंतन शुभ योगों से जग को तारा।
बहुश्रुत जीवन से जन-जन करते हैं मुलाकात।।

अहो खंती अहो मुक्ती

क्षमा-मुक्ति के वंदनीय आदर्श प्रभुवर,
महाऊर्जा का संवर्धन करते प्रकाश पुंज गुरुवर,
अलौकिक प्रभा से सम्पन्न प्रतियां है साक्षात्।।

अप्या में नंदणवणं

नंदनवन में आनंदशक्ति का छाया उजियाला,
तत्वज्ञान आगम से उद्घाटित करते भीतर का ताला,
अनुत्तर ज्ञान, दर्शन, चारित्र आपका है अवदात।।

अप्या कामदुहा धेणु

श्रुत स्वाध्याय कराते अप्रमत्त भावयोग से,
पाप-कर्मों का शोधन होता शुभ लाभ अमृत योग से,
शांत-सुधा रस का पान कराते, चंदन की होती बरसात।।

युगप्रधान शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर अभिवंदना के स्वर

गुरुवर री महिमा गावां

● साध्वी रतनश्री ●

खुशियां रो नहीं पार आज मैं उत्सव अमृत मनावां।
गुरुवर री महिमा गावां।।

सरदारशहर की पुण्यधरा पर जन्म लियो खुशकारी,
झूमरमल रा लाल लाडला नेमा कूख उजाली।
पुण्याई रो पार नहीं मैं सौ-सौ शीस झुकावां।।

प्रवचन शैली अजब-गजब री नयणा स्यूं अमृत बरसे,
आभामंडल है अति सुन्दर दर्शक रो मन हरसे।
तुलसी गुरु और महाप्रज्ञ री कृति ने खूब सरावां।।

यशोगीत थांरां गा गाकर सफल संघ हर्षित है,
श्रद्धा सुमन चढ़ावां भगवन तन-मन सब अर्पित है।
शासन सुषमा बढ़े निरंतर अंतर भाव सुणावां।।

साध्वी समाज करे अभिनंदन बनो चिरायु गुसवर,
राज अचक्का आप कराओ जब तक धरती अम्बर।
तेरापंथ मिल्यो भागां स्यूं हुलस-हुलस गुण गावां।।

लय - जहां डाल-डाल पर सोने की

धरती के श्रृंगार तुम्हारा अभिनंदन

● साध्वी प्रियंवदा ●

ओ धरती के श्रृंगार तुम्हारा अभिनंदन,
करुणा के अवतार तुम्हारा अभिनंदन।
कलयुग में सतयुग सी रचना रचाने वाले,
ओ तेरापंथ के मंदार तुम्हारा अभिनंदन।।

विनय निष्ठा की निशानी का नाम है महाश्रमण,
गुरु निष्ठा की सहनाणी का नाम है महाश्रमण।
महानता के शिखर पर विलसित ओ प्रभापुंज !
समर्पण की कहानी का नाम है महाश्रमण।।

अभिशाप को वरदान बनाना तुम्हारे हाथ में है,
महादशा को महाभाग में बदलना तुम्हारे हाथ में है।
मैं हूँ नादान और आप हो अक्षय गुणों के धाम,
मेरी सोई हुई किस्मत को जगाना तुम्हारे हाथ में है।।

तुम जीओ हजारों साल यह हमारी मन्त है,
तुम रहो सदा निरामय यह हमारी चाहत है।
मंगल प्रभात की मंगल घड़ियां हो तुम्हें मुबारक,
युगों-युगों तक महकती रहे तुम्हारी शोहरत है।।

तुम जादूगर नहीं हो फिर भी तुम्हारे प्रवचन में जादू है,
तुम मैनेजर नहीं हो फिर भी तुम्हारे प्रबंधन में जादू है।
स्वच्छंदता के तुरंग की लगाम को कसने वाले ओ महाश्रमण !
तुम मिनिस्टर नहीं हो फिर भी तुम्हारे प्रशासन में जादू है।।

चमक रहा है, विश्व क्षितिज पर

● साध्वी कारुण्यप्रभा ●

चमक रहा है विश्व क्षितिज पर महाश्रमण अभियान तुम्हारा।
पावनतम है आभामण्डल महाश्रमण सबका मनहारा।।

बड़भागी वह धरा बनी है जहां प्रभु ने जन्म लिया है,
मात-तात मन खुशियां छाई मोहन प्यारा नाम दिया है।
दुगड़ कुल का लाल लाडला बना सभी का प्राण पियारा।।

तुलसी की पैनी नजरों ने परख लिया व्यक्तित्व तुम्हारा,
मुख-मुख पर है आज बोलता महाश्रमण कर्तृत्व तुम्हारा।
सुखमय है प्रभु शरण तुम्हारी सफल बना अरमान हमारा।।

ओ करुणा के महासिंधु तेरी करुणा का आर न पार,
सहज सरल है प्रवचन शैली बहती अमृत रस की धार।
पावन चरण सन्निधि पाई तोड़ूँ भवबंधन की कारा।।

युगों-युगों तक मिले शासना नेमा नन्दन हमें तुम्हारी,
आश फली, अभिलाष फली अब सुरभित होगी मन फुलवारी।
भैक्षव शासन नन्दनवन सा संघ मिला सौभाग्य हमारा।।

तेरी मिट्टी में मिल जावां

● साध्वी संयमलता ●

तेजस्वी संन्यास तुम्हारा, है तेजोमय हर कण-कण,
करता है तेजस्विता का, संघ समूचा वर्धापन,
दीक्षा कल्याणक उत्सव लाया गण में आज दिवाली है,
करती इस तपते तारुण्य का स्वागत किरणें उजाली है,
जय-जय है ज्योतिचरण, जय-जय गरु महाश्रमण,
झुकता है तव चरणों में जहां।

आता जो तेरी शरण, मिट जाता है भवभ्रमण,
झुकता है तव चरणों में जहां।।

मां नेमा के लाल लाडले, झूमर कुल उजियारे हो,
धन्य धरा सरदारशहर, दुगड़ कुल के ध्रुवतारे हो,
जिनशासन की शान तुम्हीं हो तेरापंथ शासन के प्राण,
गति प्रतिष्ठा त्राण शरण हो, तुम भक्तों के हो भगवान्,
जाता जग बलिहारी, गुरुवर मंगलकारी,
झुकता है तव चरणों में जहां।।

है व्यक्तित्व विराट वाणी का विषय नहीं जो बन पाए,
श्रम के महादेव श्रमण से महाश्रमण तुम कहलाए,
कालजयी कर्तृत्व दे रहा गण को अभिनव ऊंचाई,
है सौभाग्य हमारा मिली शासना सुखमय वरदायी,
उज्वल आभामंडल, मुस्काता मुखमंडल,
झुकता है तव चरणों में जहां।।

दो-दो सक्षम गुरुओं की संयुक्त कृति गुरु महाश्रमण,
तुलसी के प्रतिरूप तुम्हें पा धन्य हुआ ये भैक्षवगण,
महाप्रज्ञ पट्टधर की सुयश ऋचाएं फैली दूर-दूर,
है आभारी उनके जिन ने दिया ये हीरा कोहीनूर,
झेलो शुभ भावनाएं, दीक्षा की सदी मनाएं,
झुकता है तव चरणों में जहां।।

जय जय ज्योति चरण का नारा

● साध्वी अमितयशा ●

प्रभु तुम्हारे पादाम्बुज में अर्पित है यह जीवन सारा।
विश्व पटल पर गूंज रहा है जय जय ज्योति चरण का नारा।।

नेमा-झूमर का मन उपवन पुलक उठा तुम सा सुत पाकर,
सद् संस्कार भरे जननी ने मधुर-मधुर है लोरी गाकर।
माँ की सीख सुहानी पाकर मोहन तोड़े कर्मों की कारा।।

तुलसी महाप्रज्ञ की मोहक कृति लगती सबको मनहारी,
मृदु मुस्कान शोभती मुख पर सूरत लगती प्यारी-प्यारी।
महातपस्वी महाश्रमण है भक्तों की आंखों का तारा।।

आभामण्डल पावनतम सरस सुहानी प्रवचन शैली,
युगप्रधान आचार्य प्रवर की यश गाथा है चिहुंदिशी फैली।
बरसाते भक्तों पर विभुवर निश-दिन अमृतरस की धारा।।

अजब-गजब व्यक्तित्व तुम्हारा किस उपमा से उसे सजाऊं?
शान्ति प्रदायक शरण तुम्हारी नवानिश प्रभु हर पल चाहूं।
तेरापथ अखिलेश्वर तेरा रूप लगे सबसे मनहारा।।

जन्म दिवस है आज तुम्हारा क्या चरणों में भेंट चढ़ाऊं?
राम भक्त हनुमान हृदय ज्यों अन्तरघट में तुम्हें बिठाऊं।
मन की अभिलाषा फल जाए भव सागर से करूँ किनारा।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश तुम्हीं हो

● साध्वी मैत्रीप्रभा ●

संयम के अनुत्तर साधक को, श्रद्धानत हो शीश झुकाएं।
दीक्षा कल्याणक, अमृत-उत्सव, अमृत-पुरुष को आज बधाएं।।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश तुम्हीं हो, रामलल्ला हो प्रभु तुम मेरे,
कृष्ण-कन्हैया भी तुम मेरे, हम चरणों के चाकर तेरे।
चरण-शरण प्रभु पाकर तेरी, संयम से सुरभित बन जाए,
दीक्षा-कल्याणक अमृत उत्सव, अमृत पुरुष को आज बधाएं।।

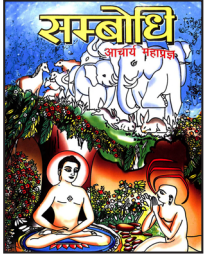
आस तुम्हीं हो, सांस तुम्हीं हो, जीवन के मधुमास तुम्हीं हो।
हृदतंत्री के तार तुम्हीं हो, जीवन के विश्वास तुम्हीं हो।
गण-बगिया के गणमाली तुम, तुमसे गण-बगिया विकसाएं।
संयम के अनुत्तर साधक को, श्रद्धानत हो शीश झुकाएं।।

तेरापंथ के महासूर्य तुम, तेजस्वी है भाल तुम्हारा,
जिनशासन के नीलगगन में, चमक रहे हो बन ध्रुवतारा।
ज्योतिचरण से पाकर ज्योति, हम भी ज्योतिर्मय बन जाएं,
दीक्षा-कल्याणक, अमृत-उत्सव, अमृत-पुरुष को आज बधाएं।।

तीर्थकर उणिहारी प्रभुवर, वीतराग लगेते साक्षात्।
तुलसी-महाप्रज्ञ सी प्रज्ञा, लिखदो गण में नूतन ख्यात।
भिक्षु-गण के उन्नायक प्रभु, महाश्रमण की महिमा गाएं।
संयम के अनुत्तर साधक को, श्रद्धानत हो शीश झुकाएं।।



संबोधि

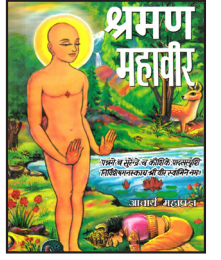


साध्य-साधन- संज्ञान



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



भय की तमिस्त्रा : अभय का आलोक

इतने में एक छोटा बच्चा आया। वह गोद में बैठ गया और कहने लगा- 'मां! तूने जो खीर खाने को मुझे दी थी, मैंने खाई। किंतु तत्क्षण वमन हो गया। किंतु मां! मैंने उसे यों ही नहीं जाने दिया वमन खा लिया।' मां सराहने लगी। भवदेव से रहा नहीं गया। उन्होंने कहा- क्या यह है तुम्हारी सामायिक? क्या सामायिक में यह सब करना है? जिसको कौवे, कुत्ते खाते हैं तुम उसकी प्रशंसा करती हो? अवसर देख नागला ने कहा- 'मुनिवर! आप क्या करने के लिए आये? क्या कै खाने के लिए नहीं? जिनको त्याग दिया, फिर उस ओर मुंह करना क्या है?' मुनि सचेत हो गए। नागला ने कहा- 'मैं ही नागला हूँ। यह आपको सुस्थिर करने के लिए मैंने किया।' मुनि पुनः संयम-पथ पर आरूढ़ हो गए।

३. न पहले श्रद्धालु और न पीछे

एकनाथ तीर्थयात्रा के लिए चले। अनेक लोग साथ में सम्मिलित हो गए। एक चोर ने भी अपनी इच्छा प्रकट की। एकनाथ ने स्वीकृति दे दी। लोगों ने कहा- यह चोर है। एकनाथ ने समझाया। चोर ने कहा- अब चोरी नहीं करूंगा। सब रवाना हो गए। चोरी की आदत थी। एक-दो दिन तो वह चुप रहा। फिर वह एक-दूसरे की वस्तुओं को इधर-उधर करने लगा। लोगों ने देखा, यह क्या मामला है। चीजों की चोरी नहीं होती किंतु किसी की कहीं मिलती है और किसी की कहीं। एकनाथ से शिकायत की। एक दिन सब सो गए। एकनाथ सोये-सोये देख रहे थे। समय हुआ। चोर उठा और अपना काम शुरू कर दिया। चोरी का नियम था। एकनाथ ने पूछा- 'कौन है?' उसने कहा- 'मैं।' अरे क्या करता है?' उसने कहा- 'चोरी नहीं करता' चीजें इधर-उधर करने का नियम नहीं है।

जो भीतर से नहीं बदलता उसका बाहर बदलना भी मुश्किल है।

ठाकर मंगलदास तीर्थयात्रा पर गए। साथ में बहुत से व्यक्ति थे। एक कवि भी था। आदतवश वहां भी शराब आदि चलने लगा। कवि से रहा नहीं गया। उसने एक दोहा बोल दिया- 'मंगलियो तीरथ गयो, करी कपट मन चोर। नौ मन पाप आगे हुतो, सौ मन लायो और ॥'

४. पहले भी श्रद्धालु और पीछे भी

मुनि गजसुकुमाल श्रीकृष्ण के छोटे भाई थे। भगवान अरिष्टनेमि द्वारका नगरी में आये। भाई के साथ गजसुकुमाल भी गए। प्रवचन सुना और विरक्त हो गए। माता और भाई श्रीकृष्ण ने बहुत समझाया। 'तुम सुकुमार हो, यह कांटों का पथ है।' सबको संतुष्ट कर वे भगवान के चरणों में समर्पित होकर बोले- 'भंते! आत्मदर्शन का पथ प्रदर्शित करें, भगवान ने कहा- मन और इन्द्रियों को भीतर मोड़कर स्वयं को देखो। ध्यान ही इसका सहज-सरल मार्ग है। भगवान का आदेश लेकर वे इमज्ञान में रात को ध्यान के लिए अकेले आ पहुंचे और ध्यानस्थ हो गए।

सोमिल नामक ब्राह्मण को पता चला कि गजसुकुमाल मुनि हो गए। मेरी लड़की से अब विवाह संबंध नहीं होगा। वह दुःखी हुआ, उद्विग्न हो गया। वह श्मशान में आया, ध्यानस्थ मुनि को देखा और क्रोध में पागल हो गया। उसने गीली मिट्टी से सिर पर पाल बांध कर श्मशान के अंगारे मुनि के सिर पर रख दिये। सिर जलने लगा। मुनि शांत रहे और स्वयं को देखते रहे। न किसी पर राग और न किसी पर द्वेष। शांत, मौन, समतायुक्त वे मुनि उसी रात्रि में निर्वाण को उपलब्ध हो गए। पहले और पीछे एक समान भावधारा में विहरण करते हुए वे सदा-सदा के लिए संसार से मुक्त हो गए।

१९. सम्यक् स्यादथवाऽसम्यक् सम्यक् श्रद्धावतो भवेत्।

सम्यक् चापि न वा सम्यक् श्रद्धाहीनस्य जायते ॥

कोई विचार सम्यक् हो या असम्यक्, श्रद्धावान् पुरुष में वह सम्यक् रूप से परिणत होता है और अश्रद्धावान् में सम्यक् विचार भी असम्यक् रूप से परिणत होता है।

(क्रमशः)

महावीर ने कहा, 'मैं गांव में जा सकता हूँ। पर इस सुनहले अवसर को छोड़कर मैं गांव में कैसे जाऊँ? स्वतंत्रता की साधना का पहला चरण है अभय। ध्यान-काल में इस सत्य का मुझे साक्षात् हुआ है। मैं अभय के शिखर पर आरोहण का अभियान प्रारम्भ कर चुका हूँ। यह कसौटी का समय है। इससे पीछे हटना क्या उचित होगा?' लोगों के अपने तर्क थे और महावीर का अपना तर्क था। उनकी वेधक शक्ति अधिक थी, अतः उससे निरुत्तर हो सब लोग गांव में चले गए।

महावीर यक्ष के मन्दिर में ध्यानलीन होकर खड़े हैं। जैसे-जैसे समय बीत रहा है, वैसे-वैसे रात की श्यामलता, नीरवता और उनके मन की एकाग्रता गहरी होती जा रही है।

अकस्मात् अट्टहास हुआ। वातावरण की नीरवता भंग हो गई। सारा जंगल कांप उठा। महावीर पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। कुछ क्षणों के बाद एक हाथी आया। उसने अपने दांतों से महावीर पर तीखे प्रहार किए पर वह महावीर को विचलित नहीं कर सका। हाथी के अट्टहास होते ही एक विषधर सर्प सामने आ गया। उसकी भयंकर फुफकार से भयभीत होकर पेड़ पर बैठी चिड़ियां चहकने लग गईं। उसने महावीर को काटा पर उनके मन का एक कोना भी प्रकंपित नहीं हुआ। यक्ष का आवेश शांत हो गया।

महावीर के जीवन में यह घटना घटित हुई या नहीं, यक्ष ने उन्हें कष्ट दिया या नहीं, इन विकल्पों का समाधान आप मांग सकते हैं, पर मैं इनका क्या समाधान दूँ? जिन ग्रन्थों के आधार पर मैं इन्हें लिख रहा हूँ, वे आपके सामने हैं। यदि आप अन्तर-जगत् में मेरे साथ चलें तो मैं इनका समाधान दे सकता हूँ।

अब हम अन्तर-जगत के प्रथम द्वार में प्रवेश कर रहे हैं। यहां विचार ही विचार हैं। अभी हम प्रवेश कर ही रहे हैं, इसलिए हमें इनकी भीड़ का सामना करना होगा। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, इनकी भीड़ कम होती चली जायेगी। दूसरे द्वार के निकट पहुंचते-पहुंचते वह समाप्त हो जाएगी।

अब हम दूसरे द्वार में प्रवेश कर रहे हैं। यहां हमें सपनों की संकरी गलियों में से गुजरना होगा। आगे चलकर हम एक राजपथ पर पहुंच जायेंगे।

अब हम तीसरे द्वार में प्रवेश कर रहे हैं। ओह! कितनी भयानक घाटियां। कितने बीहड़ जंगल! ये सामने खड़े हैं भूत और प्रेत। ये जंगली जानवर मारने को आ रहे हैं। ये अजगर, ये विषधर और ये बिच्छू! कितना घोर अन्धकार! हृदय को चीरने वाला अट्टहास! भयंकर चीत्कारें! कितना डरावना है यह लोक! कितनी खतरनाक है यह मंजिल!

सामने जो दीख रहा है, वह चौथा प्रवेश-द्वार है। वहां प्रकाश ही प्रकाश है, सब कुछ दिव्य ही दिव्य है। उसमें प्रवेश पाने वाला उस मंजिल पर पहुंच जाता है, जहां पहुंचने पर अन्यत्र कहीं पहुंचना शेष नहीं रहता। किन्तु इन खतरनाक घाटियों को पार किए बिना इन भूत-प्रेतों और जंगली जानवरों का सामना किए बिना कोई भी नहीं पहुंच पाता।

ये द्वार और कुछ नहीं है। हमारे मन की चंचलता ही द्वार है। उनका खुलना और कुछ नहीं है, हमारे मन की एकाग्रता ही उनका खुलना है। ये विचार और स्वप्न और कुछ नहीं हैं। हमारे संस्कारों को बाहर फेंकना ही विचार और स्वप्न हैं। ये भूत-प्रेत और जंगली जानवर और कुछ नहीं हैं। हमारे चिरकाल से अर्जित, छिपे हुए संस्कार का उच्छान ही भूत-प्रेत और जंगली जानवर हैं।

भगवान महावीर के पार्श्व में होने वाले अट्टहास, हाथी और विषधर उन्हीं के द्वारा प्रताड़ित संस्कारों के प्रतिबिम्ब हैं। वे उन खतरनाक घाटियों को एक-एक कर पार कर रहे हैं। आत्म-दर्शन या सत्य का साक्षात्कार करने से पूर्व प्रत्येक साधक को ये घाटियां पार करनी होती हैं।

भगवान बुद्ध ने भी इन घाटियों को पार किया था। वे वैशाखी पूर्णिमा को ध्यान कर रहे थे। उन्हें कुछ अशांति का अनुभव हुआ। उस समय उन्होंने संकल्प किया, 'मैं आज बोधि प्राप्त किए बिना इस आसन से नहीं उठूंगा।' जैसे-जैसे उनकी एकाग्रता आगे बढ़ी, वैसे-वैसे उनके सामने भयानक आकृतियां उभरने लगीं-जंगली जानवर, अजगर और राक्षस। इन आकृतियों ने बुद्ध को काफी कष्ट दिया। उनकी धृति अविचल रही, मन शांत हुआ। उन्हें बोधि प्राप्त हो गई।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण स्वाद-विजय का प्रयोग



आसक्ति-विजय के विभिन्न प्रयोगों में एक है रस-परित्याग। निर्जरा के बारह भेदों में इसका चौथा स्थान है। यह एक स्वाद-विजय का प्रयोग है। इसमें उन खाद्य-वस्तुओं का परिवर्जन किया जाता है, जो स्वादिष्ट होती हैं, जिह्वा को तृप्ति प्रदान करने वाली होती हैं। इसके अनेक प्रकार हैं। जैसे-

आयंबिल-

दिन में एक समय, एक बार, केवल एक धान्य के अतिरिक्त कुछ नहीं खाना। उसमें नमक, मसाले, घी आदि कुछ भी नहीं होना चाहिए।

निर्विगय-

दिन में एक समय, एक बार से अधिक भोजन नहीं करना। भोजन में दूध, दही आदि सभी विकृतियों (गरिष्ठ पदार्थों) का परिहार करना। छाछ, रोटी, चने जैसे पदार्थों के अतिरिक्त सरस पदार्थों का सेवन नहीं करना।

लवण-वर्जन-

नमक और नमक-युक्त भोजन का परिवर्जन करना। ओवाइय में इस परित्याग के नौ प्रकार भी उपलब्ध हैं।

रस-परित्याग क्यों?

अध्यात्म-जगत् का मौलिक तत्त्व है इन्द्रियविजय। उसका एक प्रकार है- स्वाद-विजय अथवा रसनेन्द्रिय-संयम। उसकी उपलब्धि के लिए रस-परित्याग का प्रयोग एक सशक्त साधन है। रसों का परित्याग कर रुक्ष और सादे भोजन के सेवन से अस्वाद का अभ्यास परिपक्व होता है। अधिक मात्रा में रस-सेवन से उन्माद बढ़ता है, विकार बढ़ता है, आलस्य बढ़ता है, स्वाध्याय आदि में अवरोध उत्पन्न होता है। इनसे बचने के लिए भी रस-परित्याग अपेक्षित है। उत्तराध्ययन और दशवैकालिक के सूक्त साधक के लिए दिशादर्शक हैं- रसापगामं न निसेवियव्या - ज्यादा रस का सेवन मत करो।

अभिक्षणं निव्विगई गओ य- बार-बार निर्विगय का अभ्यास करो।

वस्तु-परित्याग या आसक्ति-परित्याग

रस-परित्याग एक साधन है। उसका साध्य है- रसगत आसक्ति का त्याग। रस-परित्याग वस्तु-त्याग तक सीमित न रहकर रस (आसक्ति)- त्याग के रूप में परिणत हो, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। यदि पदार्थपरक आसक्ति न टूटे तो केवल पदार्थ का त्याग मेरी विनम्र विचारणा के अनुसार द्रव्य रस-परित्याग है। आसक्ति छूटने पर वह 'भाव रस-परित्याग' कहलाएगा।

इस सन्दर्भ में श्रीमद् भगवद्गीता का श्लोक मननीय है-

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।

रसवरजं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥

इन्द्रिय-विषयों का भोग छोड़ देने वाले व्यक्ति के विषय निवृत्त हो जाते हैं। किन्तु रस (आसक्ति) नहीं। तद्गत आसक्ति तब छूटती है, जब परम की अनुभूति प्राप्त होती है। रस-परित्याग का प्रयोग साधना और स्वास्थ्य, दोनों दृष्टियों से उपयोगी हो सकता है।

कायसिद्धि का प्रयोग

शरीर हमारा अनादिकालीन साथी है। जितना सहचरत्व शरीर निभाता है उतना वाणी, मन और श्वास भी नहीं निभाते। आज तक एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता, जब संसारी आत्माओं के साथ शरीर कभी नहीं रहा हो। यद्यपि प्राणी संसारी अवस्था में कथंचित् अशरीर भी बनता है, पर सम्पूर्णतया नहीं। गौतम ने भगवान महावीर से प्रश्न किया भन्ते! गर्भ में उत्पन्न होता हुआ जीव क्या सशरीर उत्पन्न होता है अथवा अशरीर उत्पन्न होता है? भगवान ने उत्तर दिया गौतम! वह सशरीर भी उत्पन्न होता है और अशरीर भी उत्पन्न होता है। औदारिक, वैक्रिय और आहारक शरीर की अपेक्षा वह अशरीर उत्पन्न होता है और तैजस तथा कार्मण शरीर की अपेक्षा वह सशरीर उत्पन्न होता है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री दीपोजी (गंगापुर) दीक्षा क्रमांक : 85

मुनिश्री ने प्रौढवय में दीक्षा लेकर अपना पुरुषार्थ त्याग-तपस्या में लगाकर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। शेषकाल में उपवास, बेले आदि बहुत किये तथा 7/1, 17/1, सात महीने एकांतर व 2 महीने बेले-बेले तप किया। सौलह चातुर्मासों में आपने 1878 में मासखमण, 1879 में 36 दिन, 1880 में 125 दिन, 1881 में मासखमण, 1882 में 155 दिन, 1883 में मासखमण, 1984 में 8 दिन, 1885 में 8 दिन, 1886 में छहमासी तप, 1987 में 31 दिन, 1888 में 45 दिन, 1989 में 36 दिन, 1890 में 9 दिन व डेढ़ महिना एकांतर, 1891 में 10 दिन तथा फाल्गुन महिने से आजीवन बेले-बेले का तप स्वीकार किया। 1892 में मासखमण किया। बेले-बेले तप तो चालू था ही। बेले की तपस्या में यदि पानी पीयें तो पारणे में छहों विगय का परित्याग किया। लगभग 2 वर्ष लगातार बेले-बेले तप किया। कुल सौलह चातुर्मासों के तप के दिन 4 वर्ष और एक महीना लगभग होता है। शीतकाल में 12 वर्षों तक रात्रि में सिर्फ एक चैलपट्टा ही रखते। पछेवडी नहीं ओढी। आठ साल तक उष्णकाल में तप्त शिला व रेत पर सोकर आतापना ली।

- साभार: शासन समुद्र -

अप्रैल 2024 सप्ताह के विशेष दिन	14 मई भगवान धर्मनाथ च्यवन कल्याणक	15 मई भगवान अभिनन्दन निर्वाण एवं भगवान सुमितनाथ जन्म कल्याणक
17 मई भगवान सुमितनाथ दीक्षा कल्याणक, आचार्यश्री महाश्रमण 63वां जन्म दिवस	18 मई भगवान महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण 15वां पदाभिषेक दिवस	

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

- संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
- समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
- कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
- समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस abtyptt@gmail.com पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स



कैंसर जागरूकता अभियान एवं पौध को सींचे कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद ।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के द्वारा 'कैंसर जागरूकता अभियान' व 'पौध को सींचे' सेमिनार का आयोजन 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा-४ के सान्निध्य में हुआ। साध्वी श्री जी के मंत्रोच्चार द्वारा कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ। मंगलाचरण के रूप में प्रेक्षाध्यान गीत का संगान साध्वीवृंद द्वारा किया गया। अध्यक्ष कविता आच्छा के स्वागत भाषण के पश्चात् साध्वी अर्हमप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में प्रेक्षाध्यान

की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्मरणशक्ति विकास, आत्मविश्वास जागरण, सकारात्मक सोच, खानपान में शुद्धि आदि के अभ्यास करते रहने की सलाह दी। साध्वीश्री ने कहा कि बच्चों को इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स से दूर रखा जाए और समय पर सोना, समय पर उठना तथा नौ-नौ बार ॐ या अर्हम् ध्वनि दोनों समय करें तो उनकी स्मृति का विकास तेजी से हो सकता है।

साध्वी अमितरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें भोगों से दूर रहना चाहिए, क्योंकि हम जो भोग भोगते हैं, उनसे भी कर्मों का बंधन होता है। अतः हमें अपना समय जप-

तप आदि में लगाना चाहिए। सेमिनार के दूसरे चरण में कैंसर जागरूकता अभियान 'जीत की कहानी, अपनी जुबानी', 'मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं' इसी लक्ष्य को आधार बनाकर जो बहिनें अपने मनोबल से कैंसर को जीत सकी उन्होंने अपने अनुभव और संस्मरणों के माध्यम से अन्य बहिनों से अनुरोध किया कि हमें कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से डरना नहीं है, लड़ना है। देव, गुरु धर्म पर अटूट श्रद्धा रखते हुए जो ईलाज डॉक्टर बताये वो जरूर लेना चाहिए। इधर-उधर की बातों में विश्वास न करें और अपने स्वास्थ्य के प्रति हमेशा जागरूक रहें।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष 2024 हेतु नवीन
घोषित चातुर्मास

मुनि जम्बू कुमार जी : लूणकरणसर

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस समारोह

समाधिकेन्द्र में आद्य भिक्षु की अभिवन्दना

बीदासर। तेरापंथ भवन, समाधि केन्द्र बीदासर में भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी, 'शासनश्री' साध्वी कुलप्रभाजी, 'साध्वी' जयंतयशाजी ने अपने आराध्य भिक्षु स्वामी के प्रति अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु अखण्ड व्यक्तित्व के धनी थे। वे शारीरिक, बौद्धिक एवं मानसिक सम्पदाओं से संपन्न थे। वे एक महान गुरु, महान अनुशास्ता थे। उन्होंने सत्य के लिए अभिनिष्क्रमण किया। ऐसे पराक्रमी, साहसी और दृढ़संकल्पी व्यक्तित्व आद्य प्रवर्तक का हम आज के दिन स्मरण करते हैं। साध्वी वृन्द ने सामूहिक गीतिका का मधुर संगान किया। इस अवसर पर रवि सेखानी ने अपने विचार व्यक्त किए, तेरापंथ महिला मण्डल ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन सुमन सेठिया ने किया

स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला 'आरोग्य' का भव्य आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला 'आरोग्य' का भव्य आयोजन विधान गार्डन में तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल कोलकाता द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाप्रज्ञ मेडिकल्स के उद्घाटनकर्ता महासभा एवं जै.वि. भा. के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरडिया, मुख्य अतिथि नगराज बरमेचा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा, कोषाध्यक्ष नरेश सोनी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ जीवन जीना चाहता है। इसलिए सात सुखों की परिकल्पना में स्वस्थता को प्रथम स्थान पर पहला सुख निरोगी काया के रूप में स्थापित किया गया है।

आरोग्य अनमोल है। रोग बाजार में आसानी से मिल सकता है, हॉस्पिटलों व डॉक्टरों की भी कोई कमी नहीं है, दवाईयां भी बड़ी मात्रा में मिल सकती है। आरोग्य ही एक ऐसा है जो लाख प्रयत्न करने के बावजूद भी मिलना मुश्किल है। जगत में यह कैसी

विडम्बना है कि व्यक्ति पहले धन प्राप्त करने के लिए आरोग्य को खर्च कर देता है और फिर आरोग्य प्राप्त करने के लिए धन खर्च करता है। रोग हमारे घर में नहीं घुसे इसके लिए जागरूक होना

जरूरी है और जीवन शैली में बदलाव लाना आवश्यक है। आरोग्य का आगमन एवं पुनरागमन लक्ष्मी के आगमन से भी अधिक महत्वपूर्ण है। आरोग्य सिर्फ तन के साथ जुड़ा हुआ नहीं है यह मन और भाव से भी जुड़ा हुआ है। सात्विक आहार सम्यक् श्रम, सकारात्मक सोच, तनाव मुक्ति, व्यवस्थित दिनचर्या, इन्द्रिय विषयों

से अनासक्ति, शांत, सत्यनिष्ठ, क्षमावान, प्रभु भक्ति में लीनता आदि के माध्यम से व्यक्ति आरोग्य को प्राप्त हो सकता है। मुनिश्री ने आगे कहा- भोजन के साथ तीन चीजें जुड़ी हुई हैं। उदरपूर्ति के लिए खाना प्रकृति है, जीभ तुष्टि के लिए खाना विकृति है और संयम पुष्टि के लिए खाना संस्कृति है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में आयोजित यह

कार्यशाला पूर्वांचल ते.यु.प. के परिश्रम का परिणाम है।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा रोग हो ऐसा खाओ मत, कलह हो ऐसा बोलो मत, कर्ज हो ऐसा

खर्चो मत, पाप हो ऐसा करो मत- ये चार सूत्र जीवन के आरोग्य के लिए महत्वपूर्ण है। बाल मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्वांचल स्वरलही के सदस्यों द्वारा विजयगीत के संगान से हुआ।

दो चरणों में आयोजित कार्यक्रम में दूसरा चरण

एटीडीसी के पांच वर्ष की सम्पन्नता एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स के उद्घाटन से सम्बन्धित सम्मान एवं अभिनंदन उपक्रम को समर्पित रहा। दूसरे चरण में स्वागत भाषण ते.यु.प. पूर्वांचल के अध्यक्ष संदीप सेठिया ने दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष रमेश डागा ने युवाओं में जोश भरते हुए पूर्वांचल ते.यु.प. के कार्यों की सराहना की।



आरोग्य सिर्फ तन के साथ जुड़ा हुआ नहीं है यह मन और भाव से भी जुड़ा हुआ है।

संक्षिप्त खबर

ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव हुआ सम्पन्न

राजनगर। ज्ञानशाला राजनगर का वार्षिक उत्सव साध्वी प्रसन्नयशाजी ठाणा -3 के सान्निध्य में भिक्षु निलयम राजसमंद में मनाया गया। ज्ञानशाला वार्षिक उत्सव के मुख्य अतिथि अर्चना बुगालिया, एसडीएम राजसमंद थी। भिक्षु बोधि स्थल राजसमंद के संयोजक हर्ष लाल नवलखा की अध्यक्षता में वार्षिक उत्सव की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण और ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण से हुई। वार्षिक उत्सव में साध्वी प्रसन्नयशाजी ने कहा कि ज्ञानशाला बच्चों के संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है। बचपन रूपी कोरे कागज पर संस्कारों का रंग भर कर काम किया जाता है। वर्षों पूर्व तेरापंथ धर्म संघ के नवम् आचार्य गुरुदेव श्री तुलसी ने बच्चों के संस्कार निर्माण का एक स्वप्न देखा था। उसी स्वप्न की परिणिति है नन्हे मुन्ने बच्चों की दुनिया - ज्ञानशाला। ज्ञानशाला के सभी ज्ञानार्थियों को पारितोषिक वितरित किए गए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्य नीना कावड़िया, मेवाड़ ज्ञानशाला आंचलिक सह संयोजक सुनील मुणोत, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ समिति सदस्य ऋतु धोका, ज्ञानशाला क्षेत्रीय प्रभारी विकास मादरेचा, ज्ञानशाला सहयोगी सागरमल दुगड़, वार्षिक उत्सव सहयोगी मुकेश आरती जैन सहित अनेक श्रावक श्राविका ज्ञानशाला के वार्षिक उत्सव में शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला सह संयोजिका उषा कावड़िया ने किया।

पौध को सींचें कार्यशाला का आयोजन

आर आर नगर। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंडल की अध्यक्ष सुमन पटावरी ने अपने ऊर्जावान वक्तव्य से सभी का स्वागत किया। ममता दुगड़ ने मुख्य वक्ता सुमन रांका का परिचय दिया। सुमन रांका ने बच्चों के साथ व्यवहार, खानपान की शुद्धि एवं शुद्ध वातावरण के विषय में अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि परीक्षा के अलावा भी जीवन में तनाव की स्थिति बन सकती है पर हमें तनाव मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए। भूतकाल और भविष्यकाल की चिंता ना कर वर्तमान में रहने का प्रयास करें। प्रेक्षा प्रशिक्षिका पूनम दुगड़ ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाते हुए कहा कि महाप्राण ध्वनि के द्वारा हम स्मृति विकास से स्वयं का निर्माण कर सकते हैं। कार्यक्रम का सुंदर संचालन ममता दुगड़ और पूनम दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री पदमा मेहर ने व्यक्त किया।

परीक्षाओं में बच्चे तनाव मुक्त कैसे रहें?

शिवकाशी। मुनि रश्मिकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'परीक्षाओं में बच्चे तनाव मुक्त कैसे रहें' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत प्रेरणा गीत से की गई। मुनि रश्मिकुमार जी ने सभी को प्रेरणा दी कि परीक्षा के दिनों में बच्चों को नमक का सेवन कम करना चाहिए, ईशान कोण या पूर्व दिशा की ओर मुंह करके पढ़ना चाहिए, ओम ध्वनि का उच्चारण करना चाहिए, हर समय हमें प्रसन्न रहना चाहिए अर्थात् दिमाग को ठंडा रखना चाहिए। मुनिश्री कहा इन बातों को पालन करके बच्चे 100% तनाव मुक्त रह सकते हैं। मुनि प्रियांशुकुमार जी कहा कि विराट कोहली जो 12वीं फेल हैं पर आज उन्हें कौन नहीं जानता? परीक्षा में 99% या 100% मायने नहीं रखता, आपका लक्ष्य मायने रखता है। इस कार्यशाला में अन्य समाज के लोग भी उपस्थित हुए।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

- **गुवाहाटी।** नागौर निवासी जीवनचंद - कांतादेवी कांकरिया की सुपौत्री एवं विनय-प्रीती कांकरिया की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से जैन भवन में हुआ। संस्कारक अशोक मालू, विनीत लूणिया, बजरंग डोसी एवं छतरसिंह चौरड़िया ने मंगलभावना यंत्र की विधिवत स्थापना कराई एवं पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।
- **हैदराबाद।** नोहर निवासी हैदराबाद प्रवासी सज्जन सुमन सिपानी के सुपुत्र सुमित एवं पुत्रवधु स्वेता के सुपुत्र के नामकरण कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से हैदराबाद में करवाया गया। इस कार्यक्रम में परिषद से ललित जैन ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

- **हैदराबाद।** लाडनू निवासी हैदराबाद प्रवासी अमराव सिंह भूतोड़िया एवं उनके पुत्र राजेश भूतोड़िया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। जैन संस्कारक ललित लूणिया एवं जिनेंद्र बैद ने सभी मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को कुशलतापूर्वक पूर्ण किया।
- **बेंगलुरु।** जयपुर निवासी बेंगलुरु प्रवासी महावीरचंद मनीषकुमार शाह का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से परिवार अपार्टमेंट, डोड्डकमनहल्ली में किया गया। परिषद् से संस्कारक अमित भंडारी एवं आदित्य मांडोत ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।
- **उदयपुर।** तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा छगनलाल, रविकुमार बोहरा के नूतन गृह प्रवेश का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से आयोजित किया गया। कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़ एवं संस्कारक पंकज भंडारी ने सम्पन्न करवाया।
- **पर्वत पाटिया।** मोतीलाल लीला देवी बैद के सुपुत्र सुन्दर लाल व पुत्रवधु सुधा देवी बैद का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। जैन संस्कारक पवन बुच्चा व रवि मालू ने विधि विधान पूर्वक मंगल मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान

- **सूरत।** सेमड़ निवासी सूरत प्रवासी भंवरलाल तलेसरा के सुपुत्र अशोक तलेसरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीषकुमार मालू, गौतमचंद वेदमुथा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग प्रत्याख्यान किए।

पाणिग्रहण संस्कार

- **गुवाहाटी।** श्रीदुंगरगढ निवासी गुवाहाटी प्रवासी तोलाराम मालू के सुपुत्र सुरेश मालू एवं मानकेचर निवासी स्व. रामचरण चौधरी की सुपुत्री रीना चौधरी का पाणिग्रहण जैन संस्कार विधि से समता भवन में हुआ। संस्कारक अशोक मालू एवं आनंद सुराणा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से विवाह सानन्द संपादित करवाया।

मन में दया का भाव रखना चाहिए

गुड पेरेंटिंग कार्यशाला का आयोजन

सिलीगुड़ी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित गुड पेरेंटिंग कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल सिलीगुड़ी द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में समणी निर्देशिका डॉ. मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ समणी वृंद ने नमस्कार महामंत्र से किया। कन्यामंडल द्वारा गीत के माध्यम से भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई। अध्यक्ष संगीता घोषल ने अतिथि एवं उपस्थित संपूर्ण समाज का स्वागत किया। कार्यशाला

को संबोधित करते हुए सीमा बैद ने कहा बच्चों को अपने माता-पिता को प्रणाम करना चाहिए, उनकी बातों को समझना चाहिए। शिल्पा जैन ने तीन गिलासों के उदाहरण के माध्यम से मस्तिष्क के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि जितना हम अपने मस्तिष्क को खाली रखेंगे तो उतने ही पॉजिटिव विचार मस्तिष्क में प्रवेश करेंगे। निशा अग्रवाल ने न्यूमरोलॉजी के माध्यम से बताया कि हमारा जीवन जन्म के साथ ही नंबरों से जुड़ जाता है। उन्होंने कहा कि इन नंबरों को एक्टिव करके हम अपने जीवन में मूलभूत परिवर्तन कर सकते हैं। समणी मंजूप्रज्ञा जी

ने अपने उद्बोधन में चिकित्सा की नौ पद्धतियां बताते हुए कहा कि हमें जीवन में फूलों की तरह मुस्कुराना चाहिए, मन में दया का भाव रखना चाहिए। समणी जी ने स्वस्थ भोजन, स्वस्थ काया एवं वाणी संयम के महत्व पर अपने विचार रखे।

समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने मंत्र प्रेक्षा के माध्यम से स्वयं को स्वस्थ रखने एवं रोगों से मुक्ति पाने के प्रयोग बताये। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन बैद ने किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन सहमंत्री समता पगारिया एवं दिव्या बैद द्वारा किया गया।



भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

तोशाम

मुनि देवेन्द्र कुमार जी एवं मुनि पृथ्वीराज जी आदि ठाणा -4 के सान्निध्य में महावीर जयंती कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। उपासिका मंजू जैन एवं प्रशिक्षिका ज्योति जैन ने महावीर अष्टकम् का संगान किया। महिला मंडल की बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान महावीर के संपूर्ण जीवन पर एक रोचक झांकी प्रस्तुत की।

तेरापंथ सभा के मंत्री कृष्ण जैन ने सभी का धन्यवाद किया। महावीर जयंती कार्यक्रम में भाग लेने वाले व प्रांतीय सभा की परीक्षा में भाग लेने वाले सभी बच्चों को पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम का कुशल संयोजन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने किया।

हैदराबाद

महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के विशेष अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद द्वारा करियर काउंसलिंग कार्यक्रम का आयोजन नामपल्ली स्थित एजीबिशन ग्राउंड में उत्साह के साथ किया गया।

यह कार्यक्रम कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए बहुत ही मार्गदर्शक व उपयोगी रहा। सम्पूर्ण जैन समाज के विद्यार्थियों ने इसका अच्छा लाभ उठाया। इस कार्यक्रम का संयोजकीय दायित्व सी ए दीक्षा सुराना ने बखूबी निभाया। इन्होंने टीम टीपीएफ के साथ मिलकर 100 से ज्यादा विद्यार्थियों को अलग-अलग स्ट्रीम्स पर जानकारी उपलब्ध करवाई। इस विशेष कार्यक्रम में टीपीएफ साउथ जोन अध्यक्ष मोहित बैद, टीपीएफ हैदराबाद अध्यक्ष पंकज संचेती, पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही।

दूसरी तरफ तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद द्वारा 'नेत्रदान देता है जीवन में मुस्कान' कार्यक्रम का आयोजन नामपल्ली स्थित एजीबिशन ग्राउंड में उत्साह के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 50 साधार्मिक बंधुओं ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया और सम्पूर्ण अंगदान के लिए अपना नाम लिखाया। भारतीय जनता पार्टी की माधवी लता भी ने भी स्टॉल का अवलोकन किया। इस कार्यक्रम के प्रभारी पूर्व अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा का सराहनीय श्रम रहा।

विजयनगर

महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर द्वारा फ्रीडम पार्क में बैंगलोर स्तरीय सामूहिक कार्यक्रम में जैन संस्कार विधि का भव्य स्टॉल एवं जन जागृति गतिविधियां आयोजित की गई। लगभग 15000 से अधिक लोगों की उपस्थिति में अभातेयुप के आयाम जैन संस्कार विधि की सम्पूर्ण जानकारी के पैपलेट एवं मंगल भावना पत्रक वितरित किए गए। जैन संस्कार विधि के विभिन्न संस्कारों की वीडियो क्लिप प्रदर्शित की गई। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने जैन संस्कार विधि को जन-जन की विधि बनाने का आह्वान किया। जैन संस्कार विधि के राष्ट्रीय सहप्रभारी विकास बांठिया ने जैन संस्कार विधि को आडंबर रहित बताया। इस अवसर पर अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोट, अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया, सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, अभातेयुप साथी, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य सहित परिषद साथियों एवं गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही। इस आयोजन में जैन संस्कार विधि संयोजक धीरज भादानी एवं सह संयोजक आशीष सिंघी का विशेष श्रम रहा।

रायपुर

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति - 2024 द्वारा 'सेवा' के क्षेत्र में कार्य करने वाली 14 संस्थाओं को 'प्रभु महावीर सेवा सम्मान 2024' से सम्मानित किया गया। इसी संदर्भ में तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर को भी भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव उपलक्ष्य में सकल जैन समाज के मध्य छत्तीसगढ़ शासन के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के हाथों यह सम्मान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

राजलदेसर

स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित 2623वें भगवान महावीर जन्म जयंती के पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें महावीर का शासन मिला। भगवान महावीर का जन्म

ढाई हजार वर्ष पूर्व होने पर भी आज भी महावीर की प्रासंगिकता है क्योंकि महावीर ने जो जीवन सूत्र दिए वे वर्तमान समस्याओं के समाधायक हैं। भगवान महावीर ने अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत के सिद्धांत दिए जिन्हें अपनाकर व्यक्ति शांति का जीवन जी सकता है। महावीर ने जाति पंथ से ऊपर उठकर प्राणी मात्र को धर्म करने का अधिकार दिया। अनेकांत को आत्मसात कर परिवार, समाज व संस्था में सामंजस्य बिठाया जा सकता है। आग्रह वृत्ति से बिखराव होता है। महावीर ने श्रावक के बारह व्रत बताए जिन्हें अपना कर त्याग के पथ पर आगे बढ़ा जा सकता है।

इस अवसर पर महिला मण्डल व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'महावीर की कहानी, हमारी जुबानी' की शानदार प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में साध्वी कीर्तिरेखा जी, साध्वी कुशलप्रज्ञा जी, साध्वी कमलयशा जी व साध्वी स्नेहप्रभा जी ने गीत व वक्तव्य के द्वारा भगवान महावीर की अभ्यर्थना की। अंत में सभा के मंत्री कमल दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी इन्दुयशा जी ने किया।

जसोल

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा गया। तेरापंथ महिला मंडल व ज्ञानशाला परिवार द्वारा अलग-अलग गीतिका का संगान किया गया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक कुमार तातेड़, सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचन्द सालेचा ने अपने भाव व्यक्त किये। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा मंत्री कान्तिलाल ढेलडिया ने किया। कार्यक्रम से पूर्व प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें समाज की अनेकों संस्थाओं सहित उनके सदस्यों ने भाग लिया।

राउरकेला

स्थानीय श्वेतांबर और दिगंबर समाज ने मिलकर अमर भवन से जैन मंदिर तक भव्य रैली निकाली। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत समणी जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के द्वारा हुई।

युवक परिषद द्वारा भगवान महावीर की गीतिका से मंगलाचरण किया गया। समणी करुणाप्रज्ञा जी ने सबको भगवान महावीर के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी और जीवन में त्याग का महत्व समझाया। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में अहिंसा एवं अनेकांत को अपनाना चाहिए। ज्ञानशाला के नन्हें मुन्ने बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। महिला मंडल की उपाध्यक्ष स्नेहलता चोरडिया ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सभा के पूर्व अध्यक्ष रूपचंद बोथरा ने सभी को महावीर जयन्ती की शुभकामना दी। कार्यक्रम में सभा के सदस्य, महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, ज्ञानशाला तथा दिगंबर समाज आदि की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन समणी सुमनप्रज्ञाजी ने किया।

आदर्श नगर, सवाई माधोपुर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा आदर्श नगर, सवाई माधोपुर द्वारा भगवान महावीर स्वामी की 2623वीं जन्म जयंती अणुव्रत भवन आदर्श नगर में तप, त्याग व उनके गुणानुवाद के साथ सादगी पूर्ण कार्यक्रम के साथ मनाई गई। मुख्य कार्यक्रम उपासक चन्द्रप्रकाश जैन के निर्देशन में महावीर वंदन कार्यक्रम के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल की बहनों अंकिता, कशिश व आयुषी के मंगलाचरण से हुआ। सभा के मंत्री नरेन्द्र जैन ने उपस्थित श्रावक- श्राविकाओं का स्वागत किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष धर्मराज जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष घनश्याम जैन, पूर्व अध्यक्ष रतन लाल जैन आलनपुर, अक्षय जैन, मंजू धर्मराज जैन, गीतेश घनश्याम जैन, धनलक्ष्मी धनराज जैन आदि वक्ताओं ने भगवान के जीवन चरित्र की शानदार अभिव्यक्ति भाषण व गीतिका के माध्यम से प्रस्तुत की।

उपासक चन्द्रप्रकाश जैन ने भगवान महावीर के सार्वभौम सिद्धांतों की चर्चा करते हुए वर्तमान में भगवान के उपदेशों की महत्ता व सार्थकता को स्पष्ट किया। आज के दिन को जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत का महत्वपूर्ण दिवस बतलाते हुए प्रमाद से दूर रहने की सलाह दी। नमस्कार महामंत्र जप अनुष्ठान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इससे पूर्व स्थानीय तेरापंथ समाज के धर्मानुरागी भाई बहिनों ने आदर्श नगर के विभिन्न मार्गों से प्रभात जागरिका निकाल कर भगवान महावीर के संदेश घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास किया।

सिरकाली, तमिलनाडु

तमिलनाडु के सिरकाली में स्थित श्री एस.एस. जैन स्थानक में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में भगवान महावीर का 2623वां जन्म कल्याणक महोत्सव का आयोजन किया गया। चेन्नई से समागत उपासक जयन्तीलाल सुराणा कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुनि दीपकुमार जी ने कहा आज हम अहिंसा और अनेकांत के उद्गाता की यशोगाथा गा रहे हैं, स्तुति कर रहे हैं लेकिन इतने से कल्याण नहीं होगा। महावीर हमारी जिम्हा पर नहीं हमारे जीवन में रहे। महावीर को दीवार पर लिखने की बजाय दिल में रखने की कोशिश करें, तभी हमारा कल्याण होगा। भगवान महावीर ने महावीर-पंथ का अनुगामी बनने की बात नहीं, स्वयं महावीर बनने की बात कही। भगवान महावीर का मार्ग स्वयं महावीर बनने का मार्ग है। हर व्यक्ति अपने भीतर छिपे महावीरत्व को जगा कर महावीर बनने की दिशा में प्रस्थान करें। मुनिश्री ने आगे कहा- भगवान महावीर के सिद्धांत वर्तमान युग में बहुत प्रासंगिक हैं। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत द्वारा समस्याओं से निजात पाई जा सकती है। मुनि काव्यकुमार जी ने कहा - भगवान महावीर केवल व्यक्ति नहीं, संस्कृति है। महावीर केवल शब्द नहीं विचारधारा है। भगवान महावीर धर्म प्रवर्तक ही नहीं थे, वे तो महान लोकनायक, जन-जन के उन्नायक थे। मुख्य अतिथि जयन्तीलाल सुराणा ने कहा- भगवान महावीर पुरुषोत्तम थे। उन्होंने भीषण कष्टों को सहा था। कार्यक्रम में महिला मंडल सिरकाली की बहिनों ने मंगलाचरण किया। बच्चों ने नाटक की प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने चौदह महा स्वपनों की प्रस्तुति दी। मुस्कान खिवेसरा, श्रेष्ठा कोठारी, रुचिका गोलछा, लक्ष कोठारी, दीपमाला जैन, एस एस जैन संघ के मंत्री धनराज चौधरी, सौभागमलजी सांड आदि ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महासभा क्षेत्रीय प्रभारी ज्ञानचंद आचलिया ने किया।



भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

राजाजीनगर

भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा जैन युवा संगठन द्वारा फ्रीडम पार्क, कुंडलपुर नगरी में आयोजित जन्म कल्याणक महोत्सव में नवकार महामंत्र जाप आयोजन हुआ। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर को जाप कक्ष की व्यवस्था का दायित्व संभालने का अवसर मिला। प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक चले इस जाप में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। जाप व्यवस्था में तेयुप से अजिंक्य चौधरी एवं अनिल भंडारी, किशोर मंडल से दीपक कटारिया एवं संयम पोरवाड़ ने सराहनीय श्रम किया।

बीदासर

समाधि केन्द्र बीदासर में 2623वां महावीर जन्म कल्याणक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी साधनाश्रीजी, साध्वी विमलप्रभाजी, 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी ने गीत के द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति दी। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को प्रकाशित किया। केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकेशजी ने इस अवसर

पर तीन बातों पर ध्यान केन्द्रित किया- कि भगवान महावीर क्या थे, हम क्या हैं और हमें क्या बनना है। महावीर एक प्रज्वलित ज्योति थे, हम बुझे हुए दीपक हैं और हमें ज्योतिर्मान बनना है। भगवान महावीर के सिद्धांतों को समझकर हम भी महावीर बनने की दिशा में आगे बढ़ें। साध्वियों ने चम्पू चित्र के द्वारा सुन्दर प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान महावीर की जीवन झांकी को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल की गीतिका प्रस्तुति द्वारा हुई। इस अवसर पर सभा के पूर्व मंत्री अजित बैंगानी, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा तथा कन्या मंडल संयोजिका मेधा बैंगानी ने अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन भावना दूगड़ ने किया।

राजसमन्द

भिक्षु बोधि स्थल के तत्वावधान में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। भंवरिया परिसर से भव्य शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई जो अनेक मार्गों से होते हुए भिक्षु निलयम पहुंची। शोभा यात्रा में भगवान महावीर के जीवन व उनके उपदेशों, संदेशों से सम्बन्धित सुन्दर व आकर्षक झांकिया प्रदर्शित की गयी थी। शोभा यात्रा

संपन्न होने के पश्चात् भिक्षु निलयम में धर्म सभा आयोजित की गयी। धर्म सभा में मंगल पाथेय प्रदान करते हुए साध्वी प्रसन्नयशा जी ने भगवान महावीर के उपदेशों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान महावीर ने किसी वस्तु के प्रति आसक्ति को परिग्रह कहा। अर्जन हो परन्तु उसके प्रति मोह या आसक्ति नहीं होनी चाहिए। अर्जन पूर्ण ईमानदारी व नैतिकता से हो। अनेकान्त से वर्तमान की बहुत सी समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है। साध्वी क्षितिप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। मुख्य वक्ता युवा गौरव पदम चंद पटावरी ने विस्तार से भगवान महावीर के जीवन व उनकी साधना पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने नारी सशक्तिकरण का हमेशा समर्थन किया, दास प्रथा और जातिवाद का विरोध किया।

इस अवसर पर गणपतलाल धर्मावत, हर्षलाल नवलखा, सुधा कोठारी, दर्शिता सहलोट ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महिला मण्डल की बहिनो ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत के माध्यम से भगवान महावीर के उपदेशों को बहुत ही सुन्दर व प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन अनिल बडोला ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महेश लोढ़ा ने किया।

संगत, सलाहकार और संस्कार सही होने से लाइफ बनती है सक्सेसफुल

चेन्नई।

'सही संगत' से ही हमारा मूल्य बढ़ता है, एक के साथ जुड़ने पर शून्यों की तरह हम भी मूल्यवान बनते हैं। अतः अपना ग्रुप सर्कल अच्छे दोस्तों, व्यक्तियों के साथ होना चाहिए। उपरोक्त विचार एस एस जैन भवन, आवड़ी में चेन्नई महानगर प्रवेश पर समायोजित अभिनन्दन समारोह में आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी डॉ गवेषणाश्री ने धर्मपरिषद् में रखे। गुड मैन बनने, सक्सेसफुल लाइफ के लिए प्रेरक प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने आगे कहा कि कार्य की प्रगति, निर्देशन, डायरेक्शन के लिए हमें सही सलाहकार अपने पास रखने चाहिए।

तीसरे एवं महत्वपूर्ण बिन्दु पर साध्वीश्री ने कहा कि हमारे संस्कार सम्यक् होने चाहिए। सम्यक् ज्ञान से ही सम्यक् चरित्र होता है। आगामी माधावरम्, चेन्नई चातुर्मासिक प्रवास के लिए चेन्नई महानगर प्रवेश पर साध्वीश्री ने प्रसन्नता प्रकट की कि हम गुरुदेव की आज्ञानुसार आज चेन्नई शहर में मंगल प्रवेश कर रहे हैं। अपनी दीक्षा के 22 वर्ष पश्चात अपने संसारपक्षीय ननिहाल क्षेत्र आवड़ी में आने पर साध्वी मेरुप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी मंयकप्रभा ने कहा कि भारतीय संस्कृति के पास ग्रंथ, पंथ और संत रुपी तीन सम्पदाएं हैं। इनमें से महत्वपूर्ण संत सम्पदा से ही भारतीय संस्कृति जीवंत सस्कृति है। साध्वी दक्षप्रभा ने गीत का संगान किया।

मुख्य वक्ता जवाहरलाल कर्णावट ने कहा कि विश्व में सन्मार्ग, सुपथ दिखाने में चरित्र आत्माओं का विशेष योगदान है। जीवन में कौन से समय, कौनसा टर्निंग पॉइंट आ जाये, मालूम नहीं पड़ता, अतः सत्यधर्मात्मक बनने के लिए अटूट श्रद्धा के साथ महापुरुषों का अनुसरण करना चाहिए। इससे पूर्व प्रातः शुभ वेला में आवड़ी के मुख्य मार्गों से होती हुए अहिंसा रैली के साथ साध्वीवृन्द ने एस एस जैन संघ भवन प्रवेश किया।

मंगलाचरण आवड़ी के बोहरा परिवार की सदस्याओं ने प्रस्तुत किया। स्वागत स्वर आवड़ी संघ से मदनलाल बोहरा, सभाध्यक्ष उगमराज सांड एवं माधावरम् तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड के प्रबन्ध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने दिया।

अम्बतूर एवं आवड़ी ज्ञानशाला ने लघुनाटिका के माध्यम से मनुष्य जन्म के महत्व को समझाया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका का संगान किया। लता बोहरा, जैन महासंघ के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, साहुकारपेट तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड के प्रबन्ध न्यासी विमल चिप्पड़, ट्रिप्लीकेन के प्रबन्ध न्यासी सुरेश संचेती, साध्वीश्री के ज्ञातिजन, कोपल जैन संघ के मंत्री पारसमल जीरावला आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रवीण सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन माधावरम् ट्रस्ट से मंत्री पुखराज चोरड़िया और एस एस जैन संघ, आवड़ी से कोषाध्यक्ष हीरालाल रांका ने किया।

मुझे महावीर बनना है कार्यशाला से जाना वीतरागता का लक्ष्य

गांधीनगर, बेंगलुरु।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री उदितयशा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा भगवान महावीर के 2623वें जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर विशेष व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। अर्हत् वंदना के मंगल संगान के साथ शुरू हुई इस कार्यशाला में साध्वी भव्ययशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने थीम सॉन 'मुझे महावीर बनना है' का सुमधुर संगान किया।

भगवान महावीर की साधना का प्रारंभिक और अंतिम बिंदु जागरूकता है। हम उनकी देह ज्योति, शब्द ज्योति एवं आत्म ज्योति से प्रेरणा प्राप्त कर लक्ष्य की ओर गति करेंगे, अप्रमत्तता की साधना करेंगे तो हम भी एक दिन महावीर बन सकते हैं।

उपरोक्त विचार साध्वी उदितयशा जी ने कार्यशाला के संभागियों को प्रेरणा देते हुए व्यक्त किए। साध्वीश्री ने आगे कहा कि हमारा लक्ष्य वीतरागता होना चाहिए फिर चाहे उसकी प्राप्ति में कितने ही जन्म लग जाए। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने साधना के प्रथम सोपान - ध्यान के अंतर्गत कायोत्सर्ग का विशेष प्रयोग करवाया एवं प्रतिदिन

कम से कम 5 मिनट कायोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी भव्ययशा जी प्रैक्टिकल एक्सपेरिमेंट्स के माध्यम से समझाया कि इंसान का लक्ष्य बड़ा होना चाहिए। लक्ष्य बड़ा होगा तो छोटी- बड़ी सारी इच्छाएं उसमें स्वतः समाहित हो जाएंगी। आपने महावीर बनने के लिए महावीर के प्रिंसिपल्स नॉन वॉयलेंस (अहिंसा), नॉन पोसेसिवनेस (अपरिग्रह) एवं नॉन एक्सोल्यूटिज्म (अनेकान्तवाद) को सरल भाषा में समझाकर उन्हें रियलिटी में जीने की प्रेरणा दी।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए कहा

कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए उसकी सतत् स्मृति आवश्यक है। आपने महावीर बनने के रहस्यों को जानने के लिए आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित 'श्रमण महावीर' पुस्तक के स्वाध्याय करने की विशेष प्रेरणा प्रदान की।

साध्वी भव्ययशा जी ने भगवान महावीर के जीवन से जुड़े कुछ रोमांचक प्रश्न पूछे जिसमें लगभग उपस्थित सभी ने भाग लिया। जिज्ञासा व समाधान सत्र में साध्वी उदितयशा जी ने जिज्ञासुओं को सरल भाषा में सटीक समाधान प्रदान किया।

अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोकरणा ने मंगलकामना एवं कृतज्ञता के स्वर व्यक्त किए। तेयुप

अध्यक्ष रजत बैद ने आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन, महिला मंडल अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल, संयोजक विमल धारीवाल, तेयुप पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं अनेकों श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। इससे पूर्व प्रातः काल जैन युवा संगठन द्वारा फ्रीडम पार्क में आयोजित जन्म कल्याणक समारोह में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर द्वारा हड्डी और मांशपेशियों की जाँच के लिए विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 150 लाभार्थियों ने चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त किया।



गुजरात स्तरीय महाश्रमणोस्तु मंगलम् का भव्य कार्यक्रम

अहमदाबाद।

सरदार पटेल ऑडिटोरियम शाहीबाग में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में ते.म.मं अहमदाबाद द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के पावन अवसर पर गुजरात स्तरीय महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम की शुभ शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ 'शासनश्री' साध्वी सरस्वतीजी के पावन सान्निध्य में हुई। प्रथम चरण में कैसर जागरूकता अभियान के तहत गुजरात कैसर रिसर्च इंस्टीट्यूट के सहयोग से मैमोग्राफी टेस्ट का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा, महामंत्री नीतू ओस्तवाल आदि की गरिमामय उपस्थिति में संरक्षिका प्रकाश देवी तातेड के द्वारा किया गया।

स्थानीय अध्यक्ष हेमलता परमार और पूरी टीम की उपस्थिति रही। गुजरात कैसर इंस्टीट्यूट से डिप्टी डायरेक्टर डॉ. प्रीति सिंघवी, डॉ. रोहिणी ने अपनी टीम के साथ उपस्थित होकर मैमोग्राफी टेस्ट किया। अवेयरनेस का यह कार्य पूरे वर्ष भर महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा निःशुल्क किया जाएगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहमंत्री सुमन कोठारी एवं पूर्व मंत्री अनिता कोठारी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन कार्यक्रम राष्ट्रीय सह संयोजिका कुमुद कच्छरा ने, गुजरात के राज्यपाल श्री एवं मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन तेममं अहमदाबाद उपाध्यक्ष सुशीला खतंग, सहमंत्री सुमन कोठारी ने किया। सुमधुर गायिका जिज्ञासा व निष्ठा ने स्वर लहरी से वातावरण को महाश्रमणमय बना दिया। गुरु अभ्यर्थना में अहमदाबाद कन्या मंडल व महिला मंडल द्वारा महाश्रमण अष्टकम् की प्रस्तुति की गई।

महाश्रमणोस्तु मंगलम् लोगो का अनावरण अ.भा.ते.म.म राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा, महामंत्री नीतू ओस्तवाल, मुख्य अतिथि अहमदाबाद महापौर प्रतिभा जैन, मुख्य वक्ता डॉ. महावीर गोलेच्छा आदि द्वारा किया गया। कार्यक्रम में गुजरात स्तर से 15 महिला मंडल, विभिन्न संघीय संस्थाओं के अध्यक्ष एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति एवं स्थानीय अध्यक्ष हेमलता परमार एवं उनकी पूरी टीम अन्य 36 सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं की गरिमामय उपस्थिति रही। गुरु की यशोगाथा एवं अनुशासना को उजागर करने वाली 'सवाल अंबर से जवाब धरती के' मंत्रमुग्ध करने वाली भावविभोर प्रस्तुति ते.म.मं अहमदाबाद की युवती बहिनों द्वारा की गई। राष्ट्रीय

अध्यक्ष सरिता डागा के विशेष उद्गारों ने उपस्थित जनमेदिनी को भावविभोर कर दिया।

अहमदाबाद की सम्पूर्ण टीम के अथक श्रम को सराहते हुए उन्होंने कहा कि महिला शक्ति द्वारा गुरु अभ्यर्थना पर 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' की यात्रा पूरे देश में तेरापंथ धर्म संघ का परचम लहराये ऐसी कामना करती हूँ। आज के स्वर्णिम अवसर पर गुरु दृष्टि अनुसार तप की भेंट चढ़ाने का आह्वान किया। महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम की राष्ट्रीय संयोजिका सूरज बरडिया ने कहा कि ऐसे लग रहा है कि तेरापंथ के दिव्य दिवाकर साक्षात् यहाँ विराजमान हैं। महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने आचार्य महाश्रमण जी के साहित्य 'जीने की कला' का परिचय प्रस्तुत किया। आपने कहा महाश्रमण साहित्य संपूर्ण मानव जाति को जीवन जीने की कला सिखाता है। गुरु का साहित्य हम सब के लिए कल्याणकारी है।

डॉ. महावीर गोलेच्छा ने आचार्य महाश्रमण जी की पुस्तक 'सुखी बनें' पर सुन्दर और सरल भाषा में विवेचन कर गुरु अभ्यर्थना में अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण जी पर एक रोचक प्रदर्शनी लगाई गई एवं जीवन झांकी प्रस्तुति की गई। कन्या मंडल राष्ट्रीय प्रभारी अदिति सेखानी ने

अपने विचार व्यक्त किये।

गुजरात स्तरीय 15 क्षेत्रों से समागत महिला मंडल का राष्ट्रीय अध्यक्ष, स्थानीय अध्यक्ष एवं पदाधिकारी द्वारा सम्मान किया गया। अहमदाबाद से विभिन्न अन्य 36 सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। इस स्वर्णिम पल को यादगार बनाने में ते.म.मं अहमदाबाद द्वारा भावना चौका को अनुदान, 2 अट्टाई तप की भेंट राष्ट्रीय अध्यक्ष को प्रदान की गई। एक वर्ष तक लगातार प्रतिदिन 3 एकलठाणा एवं 17 अप्रैल को एक दिन सामूहिक एकलठाणा के संकल्प पत्र भरवाए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय संरक्षिका, परामर्शकगण, पदाधिकारी, कार्यसमिति, कन्या मंडल आदि का पूर्ण सहयोग रहा। आभार संगठन मंत्री रेखा धुपिया ने किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री बबीता भंसाली ने किया। लगभग 1000 भाई बहिनों की सहरातीय उपस्थिति ने इस कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये।

तृतीय चरण में मंडल द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत Solution to Plastic Pollution अभियान के अंतर्गत राजस्थान हॉस्पिटल में प्लास्टिक रीसाइकलिंग मशीन का उद्घाटन किया गया।

देश के नवम् आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का हुआ शुभारंभ

कोलकाता। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पूर्वांचल कोलकाता के पांच वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में आरोग्य - स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन तेयुप पूर्वांचल कोलकाता द्वारा किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता ने भारत का 9वां एवं पूर्वी भारत का प्रथम आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल्स का भव्य उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में किया गया। समारोह का द्वितीय चरण मुनि जिनेशकुमार जी के मंगल मंत्रोच्चार से प्रारंभ हुआ। पूर्वांचल स्वर लहरी के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला हेतु प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

मुनि परमानंद जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष संदीप सेठिया ने उपस्थित राष्ट्रीय पदाधिकारी, सभा, महिला मंडल, तेयुप के पदाधिकारी, दान दाताओ एवं अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने पूरी पूर्वांचल टीम की प्रशंसा करते हुए समस्त पूर्वांचल वासियों को बधाई देते हुए आगे आने वाले दिनों में हॉस्पिटल खोलेने की प्रेरणा दी।

श्री तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन श्री

भीलवाड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल भीलवाड़ा द्वारा सदस्य संपर्क अभियान के क्रम में भीलवाड़ा की महावीर कॉलोनी, बापूनगर, कांचीपुरम, पार्श्वनाथ कॉलोनी, अनुकम्पा, अहिंसा बंग्लो एवं आसपास की कॉलोनी के साथ प्रज्ञा भारती में एक संगोष्ठी रखी गई। मंडल की बहिनों ने नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यशाला की शुरुआत की। महिला मंडल अध्यक्षा मैना कांठेड ने उपस्थित बहिनों को सेवा, समर्पण की मिसाल तेरापंथ महिला मंडल जैसे मजबूत संगठन से जुड़कर स्वयं के साथ संघ विकास की प्रेरणा दी। संगठन मंत्री सुमन दुगड़ ने नई बहिनों को सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया। मंत्री अमिता बाबेल ने केंद्र द्वारा संचालित परियोजनाओं की जानकारी दी।

कोयंबटूर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कोयंबटूर तेरापंथ महिला मंडल ने भिक्षु

अभिनिष्क्रमण दिवस मुनि हिमांशुकुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मनाया। महिला मंडल की बहनों ने इस दिवस पर सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। मुनि हिमांशु कुमार जी ने सुमधुर गीतिका के संगान के माध्यम से आचार्य भिक्षु के जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया। मुनि हेमन्तकुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु लोह पुरुष थे। उन्होंने अनेकों कठिनाइयां होने पर भी सिद्धांतों को कभी नहीं छोड़ा।

अहमदाबाद

तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत राजस्थान हॉस्पिटल में प्लास्टिक रीसाइकलिंग मशीन का उद्घाटन किया। राजस्थान हॉस्पिटल के कमेटी सदस्य एवं पूरे कर्मचारी के समक्ष अखिल भारतीय महिला मंडल के अध्यक्ष सरिता डागा ने मशीन लगाने का मुख्य कारण बताया। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक का प्रयोग किस प्रकार समाज के लिए हानिकारक होता जा रहा है। किस प्रकार अज्ञात पशुओं के लिए प्लास्टिक हानिकारक है। हम प्लास्टिक को रीसाइकल करके अन्य चीजों

का उत्पादन कर सकते हैं। प्लास्टिक रीसाइकलिंग से क्या-क्या चीज बनती है उन्होंने बताया। राजस्थान हॉस्पिटल के सीईओ राजश्री खिमेसरा एवं मंत्री महेंद्र शाह ने सभी कमेटी सदस्य की उपस्थिति में मशीन का उद्घाटन हुआ।

राजश्री बेन और महेंद्र अन्याव ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा ने अध्यक्ष हेमलता परमार एवं उनकी पूरी टीम का स्वागत किया गया। अखिल भारतीय महिला मंडल के सभी पदाधिकारी एवं उपस्थित थरेपी एवं तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद परामर्शक पदाधिकारियों की उपस्थिति में उद्घाटन किया गया।

रीसाइकलिंग मशीन के प्रायोजक सावित्री देवी रायचंद जी लुनिया परिवार। महिला मंडल के कर्मठ अध्यक्ष हेमलता परमार ने राजस्थान हॉस्पिटल के कमकटी सदस्य का आभार ज्ञापन किया।

उन्होंने अपने हॉस्पिटल में मशीन लगाने की जगह दी। संयोजिका संगठन मंत्री रेखा धुप्या, ममता बागरेचा कुशल संचालन प्रचार प्रसार मंत्री श्वेता लुनिया ने किया।

पृष्ठ 15 का शेष

दूसरों की पीड़ा...

धर्म के पथ पर चलने वाला अच्छी गति में जा सकता है और पाप कर्म ज्यादा करने वाला अधोगति में पैदा हो सकता है। हम ध्यान दें कि हम मनुष्य हैं इस मनुष्य जन्म के बाद दुर्गति में न जाता पड़े इसलिए अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म की आराधना करने का प्रयास करें। छोटी-छोटी हिंसा से भी बचें। दूसरे को पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए, हो सके तो किसी का आत्मोत्थान करें। यह चिंतन करें कि मुझे सुख प्रिय है, तो अन्य जीवों को भी सुख प्रिय हो सकता है। जो व्यवहार मैं दूसरों से नहीं चाहता वह व्यवहार मैं भी दूसरों के साथ नहीं करूँ। पापों से जितना हो सके बचने का प्रयास करें। धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास करें। छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाये तो आदमी अच्छी प्रगति कर सकता है। दुर्गति से बच सकता है। हम धर्म के पथ पर चलने का प्रयास करें। पूज्यवर के स्वागत में पीठी गांव के सरपंच ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि भी दिनेश कुमार जी ने किया।

सद्गुण रूपी भूषणों से शोभित हो मानव जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

पाटोदा।

23 अप्रैल, 2024

महातपस्वी महापुरुष आचार्य श्री महाश्रमणजी पाटोदा के जय भवानी विद्यालय के प्रांगण में पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए महामनीषी ने फरमाया कि चौरासी लाख जीव योनियों में मनुष्य जन्म एक ऐसा जन्म है जहां से साधना करके सीधा मोक्ष जाया जा सकता है। जो उत्कृष्ट साधना एक मनुष्य कर सकता है वह उपलब्धि अन्य किसी योनि में संभवतः नहीं हो सकती। मनुष्य यह सोचे कि मुझे अच्छा जीवन मिला है, मैं अध्यात्म-धर्म से युक्त जीवन जीऊं, मेरे जीवन में सद्गुणता-सज्जनता रहे। शरीर को बाह्य आभूषणों से आभूषित करने की अपेक्षा सद्गुण भूषणों से

विभूषित करना विशेष बात है। हम आत्मा को विभूषित करने वाले धार्मिक-आध्यात्मिक आभूषण पहने।

शरीर का एक अंग है हाथ। हाथ का आभूषण कंगन तो हो सकता है पर हाथ से शुद्ध दान देना, आध्यात्मिक सेवा करना सद्गुण भूषण हो सकता है। दान कभी निष्फल नहीं जाता है। ज्ञानदान, अभयदान भी बहुत बड़ा दान होता है।

सिर का भूषण है-

गुरु के चरण में नमस्कार करना।

मुंह का आभूषण है-

सत्य वचन बोलना।

कान का भूषण है-

ज्ञान की बात, अध्यात्म वाणी को सुनना।

हृदय का आभूषण है-

हृदय में सरलता-स्वच्छ वृत्ति रखना।

भुजाओं का भूषण है-



पौरुष का आध्यात्मिक सेवा में उपयोग करना।

बाह्य आभूषणों के तो पैसे लगते हैं, पर सद्गुणों के आभूषण जीवन में बिना पैसे के भी हो सकते हैं। दुनिया में अनेक महापुरुष हुए हैं। इस देह में

जो आत्मा है उसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त आनन्द और निरन्तरायता है। इस मानव जीवन में हम इन भीतरी गुणों को प्रकट करने का प्रयास करें। जीवन को सुदुगुण संपन्न बनाने का प्रयास करें। बड़ों के प्रति हमारा अच्छा

सम्मान और विनय युक्त व्यवहार हो। विद्यार्थी विद्या के साथ विनय का भी विकास करें। अंहकार विद्या का दूषण है, हमारी वाणी भी मधुर हो, जीवन में ईमानदारी हो, खान-पान शुद्ध हो। हम इस मानव जीवन को सद्गुणों से आभूषित करने का प्रयास करें।

पूज्यवर के स्वागत में पाटोदा जैन समाज की ओर से श्रीमती सुषमा कांकरिया, नगर अध्यक्ष राजू जाधव, गणेश कवड़े, सत्यभामा ताई, डा. विश्वास कदम, अप्पा साहब राधव, सुरेश ताई, संजय कांकरिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। चन्दनबाला कांकरिया, समकित कांकरिया, संस्कृति श्राविका मंडल एवं कन्या मंडल ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

योग साधना से प्राप्त हो सकता है परम सुख का स्थान: आचार्यश्री महाश्रमण



बीड़।

26 अप्रैल, 2024

जनोद्धारक आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ दो दिवसीय प्रवास हेतु बीड़ पधारे। आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए परमपुरुष ने फरमाया कि दो शब्द हैं- भोग और योग। तीसरा मिलता-जुलता शब्द है- रोग। आदमी शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श इन इन्द्रिय विषयों का उपभोग करता है। इन्द्रिय विषयों का आसक्ति के साथ भोग जन्म-मरण के चक्र को बढ़ाने वाला हो सकता है। भोगी भ्रमण करता है, अभोगी भ्रमण से विप्रमुक्त हो जाता है। रोग शारीरिक और मानसिक भी हो सकता

है, आसक्ति से भी रोग बढ़ सकते हैं। रोग को उत्पन्न करने में भोग अपनी निमित्तता दर्ज करा सकता है।

यदि व्यक्ति धार्मिक चेतना से खाने का संयम रखता है तो धर्म लाभ के साथ शरीर स्वस्थ रखने में भी निमित्तभूत बन सकता है। आदमी योग की, धर्म की साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करे। आसन भी योग का एक अंग है। एक जगह कहा गया है कि मोक्ष का उपाय है वह सारा ही योग है। संक्षेप में ज्ञान, दर्शन और चरित्र ही मोक्ष का मार्ग है। हम इस मानव जीवन में योग साधना की दिशा में आगे बढ़ें।

इस मानव जीवन में धर्म के संस्कार आ जाए। ज्ञानशाला से जुड़े ज्ञानार्थी बैठें

हैं, छोटी उम्र में ही इनको धर्म के संस्कार मिल जाते हैं, धार्मिक ज्ञान सिखा दिया जाता है। अच्छे संस्कार आ जाते हैं तो यह नई पौध सुसंस्कारी बन जाती है। धार्मिक ज्ञान के साथ यथार्थ के प्रति भी श्रद्धा बढ़े। यथार्थ दृष्टि ही सम्यक दर्शन है। महाव्रतों का आचरण करना सम्यक् चरित्र है। सम्यक्त्व के साथ अणुव्रत को भी स्वीकार कर ले तो वह भी देश चरित्र हो सकता है। ज्ञान साधना करना योग साधना है। भोग से योग की ओर गति करने का प्रयास करें। विद्या-संस्थानों में अध्यात्म के ज्ञान की बातें भी बताई जाए, योग के प्रयोग भी चलें। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ जाये तो विद्या-संस्थानों की सफलता हो सकती है।

सम्यक् ज्ञान के बाद श्रद्धा मजबूत हो। जो अच्छी बात जान ली है, उस बात के प्रति श्रद्धा हो जाये और वह जीवन व्यवहार में भी आ जाये। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र मोक्ष का मार्ग बन जाता है। परम सुख का स्थान मोक्ष योग साधना से प्राप्त हो सकता है।

आचार्यप्रवर के स्वागत में उपासक सुभाषचन्द समदड़िया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

दूसरों की पीड़ा में नहीं आत्मोत्थान में बनें सहायक: आचार्यश्री महाश्रमण



पीठी।

25 अप्रैल, 2024

जिनशासन प्रभावक आचार्य श्री महाश्रमणजी आज अपनी धवल सेना के साथ पीठी पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि हमारी दुनिया में मित्र भी मिल सकते हैं, तो शत्रु भी मिल सकते हैं। हम एक अपेक्षा से किसी को अपना मित्र या शत्रु भी मान सकते हैं, व्यवहार के आधार पर ऐसा चिन्तन हो सकता है। परन्तु धर्म का सिद्धान्त है कि सबसे बड़ा कोई शत्रु हमारी आत्मा ही हो सकती है। जितना नुकसान हमारी आत्मा हमारा कर सकती है, उतना नुकसान अन्य कोई शत्रु भी नहीं कर सकता। अन्य कोई शत्रु तो तकलीफ दे सकता है, गला काट दे या जान से मार दे, इससे ज्यादा क्या कर सकता है। शरीर भले नष्ट हो जाये पर

आत्मा अमर है, आत्मा कभी नहीं मरती। कोई भी ऐसा शस्त्र दुनिया में नहीं है, जो आत्मा को खत्म कर सके। परन्तु हमारी आत्मा जब बहुत बड़ी दुश्मन बन जाती है तो कितने जन्मों में तकलीफ पानी पड़ सकती है, नुकसान भोगना पड़ सकता है। इसलिए आर्ष वाणी में कहा कि कंट को काटने वाला दुश्मन भी उतना नुकसान नहीं कर सकता, जो नुकसान हमारी दुरात्मा बनी हुई आत्मा कर सकती है।

जो आदमी दया विहीन है, धर्माचरण नहीं करने वाले हैं, अहिंसा, संयम, तप की आराधना में रुचि नहीं लेने वाले हैं, जब बाद में मौत निकट आती है तब सोच सकते हैं कि अरे! मैंने धर्म नहीं किया, पाप ज्यादा किया है, अब मेरा क्या होगा? अगली गति कहां मिलेगी? अब मुझे नरक में जाना पड़ेगा। (शेष पेज 14 पर)

समर्पण में शर्त नहीं और भक्ति में अहंकार नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

साकत।

22 अप्रैल, 2024

तेरापंथ के केंद्र युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी का आज प्रातः साकत में पदार्पण हुआ। पूज्यप्रवर ने पावन अमृत देशना देते हुए फरमाया कि हमारे यहां साधु-साध्वी संस्था में आतिथ्य सत्कार के सन्दर्भ में भक्ति शब्द प्रयोग होता है। भक्ति शब्द में बहुत गरिमा है। किसी का भक्त होना श्रद्धा व बहुमान का भाव है। जैन शासन में भगवान ऋषभ से लेकर भगवान महावीर तक, चौबीस तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है। यह नमन है, इसमें भी भक्ति है। निर्ग्रन्थ प्रवचन के प्रति भक्ति है कि यही निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य है। तीर्थंकरों एवं उनके द्वारा प्रवर्तित प्रवचन के प्रति भी भक्ति की भावना होनी चाहिए।

भक्ति अपने आराध्य, अपने आदर्श के प्रति हो सकती है। समर्पण में शर्त और भक्ति में अहंकार नहीं होना चाहिए। 'लेकिन' और 'यदि' जहाँ आ जाए, कोई ननुच हो जाए मानना चाहिए कि वहाँ पूर्णतया समर्पण नहीं है।

जब मैं था तब तुम नहीं,

जब तू था तब मैं नाय।

प्रेम गली अति सांकड़ी,

जामे दो न समाय।।

जहाँ अहंकार है वहाँ प्रभु नहीं हैं और जहाँ प्रभु है वहाँ अहंकार नहीं है। भक्ति की गली संकड़ी है जिसमें दोनों एक साथ नहीं रह सकते।

अपने-अपने स्तर की भक्ति हो सकती है। गुरु के प्रति भक्ति होती है, हमारे यहां आचार्य और गुरुदेव एक ही होते हैं, उपाध्याय भी कोई अलग साधु नहीं होता। भिक्षु स्वामी से लेकर आज तक किसी भी साधु को उपाध्याय का पद नहीं दिया गया। यह भी भक्ति का, अद्वैतवाद का अनूठा उदाहरण है। यहाँ पावर सेन्टर एक ही है। श्रावक समाज के लिए भी भक्ति का केन्द्र एक ही होता है। दर्शन-सेवा करने भी कहीं जाना हो तो गुरु के पास ही जाना होता है।

भक्ति योग में श्रद्धा, आस्था और निरहंकारता के साथ विनयपूर्ण व्यवहार होता है। किसी के पैर में अपना मस्तिष्क लगा देना बहुत बड़ी भक्ति है। भले राजा, राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री हो उनके पैरों में भी प्रायः कोई नहीं झुकता है। भक्ति व्यक्ति, आराध्य, आदर्श और सिद्धान्त के प्रति भी हो सकती है। भगवान महावीर हमारे आराध्य हैं, सिद्धत्व को प्राप्त आत्मा हैं, उनके नाम के सामने सब जैन एक हो जाते हैं। आचार्य भिक्षु



का भी भगवान महावीर के प्रति भक्ति, नैकट्य और समर्पण का भाव था। भिक्षु स्वामी के प्रति भी कितनी भक्ति देखने को मिलती है। उनकी भक्ति में कितने-कितने गीतों की रचना हुई है। वे हमारे धर्म संघ में आस्था के केंद्र हैं। उत्तरवर्ती आचार्यों के प्रति भी हमारी भक्ति हो

सकती है, जिनके पास दीक्षा ली, जिनसे प्रेरणाएं मिलीं, उनके प्रति भी कृतज्ञता का भाव, भक्ति का भाव हो सकता है।

भक्ति से शक्ति भी प्राप्त हो सकती है। नवकार मंत्र में पवित्र-आत्माओं का उल्लेख है, उनके प्रति भी भक्ति हो। ईमानदारी के प्रति भी भक्ति हो सकती

है। हम अपनी साधना, ज्ञान, ध्यान में विकास करते रहें।

आचार्य प्रवर ने मुनि वृन्द की जिज्ञासाओं का सम्यक समाधान कर हाजरी वाचन करवाया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

